चन्दामामा

फ़रवरी १९७०

संपादकीय	१
कल्पना-सुंदरी	२
शिथिलालय	९
निडर (वेताल कथा)	१७
बलिदान	२३
बदसूरत दुलहिन	२९
घमण्ड का नतीजा	३३
सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ	४१
महाभारत	४९
गांधी की कहानी	५७
संसार के आश्चर्य	६१
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता	६४

पालन पोषण सही कीजिए ;
बच्चों को बोर्नविटा दीजिए !

सख़्त मोच आ गई ? मिन्टों में आराम पाइये...

अमृतांजन

के ज़रिये !

मोच, सरदर्द, सर्दी-जुकाम और पेशियों के दर्द से छुटकारा पाने के लिये झट अमृतांजन मालिश कीजिये ...तकलीफ़ से आराम ! पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। इसके अलावा यह किफ़ायती 'जार' और कम क़ीमत वाले डिब्बों में भी मिलता है।

अमृतांजन—सर्दी-जुकाम और दर्द के लिये १० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण !

अमृतांजन लिमिटेड : मद्रास ० बम्बई ० कलकत्ता ० नई दिल्ली ० हैदराबाद ० बंगलोर

AM 5338A

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
हमारे पास इतनी संख्या में लेखकों से रचनाएँ प्राप्त हो रही हैं, उन सब को अस्वीकृत अवस्था में वापस करना कठिन मालूम होता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचनाओं के साथ वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकट अवश्य ही भेजें, जिससे हम रचना के स्वीकृत होने पर तत्काल ही सूचना दे सके और अस्वीकृत हालत में वापस कर सके। डाक टिकटों के अभाव में हम किसी भी दशा में रचनाएँ वापस नहीं कर सकते।
वर्ष : २१ फ़रवरी १९७० अंक : ६
CHITRA

कल्पना-सुंदरी

शूरसेन नगर का युवराज प्रदीप सुंदर और बुद्धिमान था। उसमें एक ही ऐब था। वह यह कि बात-बात पर वह नाराज होता और छोटी-सी बातों पर भी दुखी हो जाता।

प्रदीप जब विवाह के योग्य हुआ तब कई देशों की राजकुमारियों के चित्र मंगवाये गये। मगर उन में से एक भी चित्र उसे पसंद नहीं आया। बात यह थी कि उसके मन में बहुत दिनों से एक कल्पना-सुंदरी का चित्र अंकित था। ऐसी कन्या के प्राप्त होने तक प्रदीप विवाह करना नहीं चाहता था।

प्रदीप के सामने किसी भी राजकुमारी का चित्र लाते तो वह झट कह देता–"मैं जिस कन्या से विवाह करना चाहता हूँ, वह यह नहीं।" हर बार प्रदीप के मुंह से यही बात निकलते देख राजा भी ऊब गया। उसने एक दिन प्रदीप से कह ही दिया–"तुम जैसी कन्या चाहते हो उसकी तुम ही खोज़ करो।"

एक दिन प्रदीप एक दल को साथ लिये उस कल्पना-सुंदरी की खोज़ में चल पड़ा। सैकड़ों मील घूमने के बाद भी उसे वह सुंदरी दिखाई न दी। आखिर ऊब कर वह अपनी राजधानी को लौट रहा था। एक गांव में हाट लगी थी। वहाँ पर मनोरंजन के कई कार्यक्रम चल रहे थे। प्रदीप भी मनोरंजन करने वहाँ पहुँचा। वहाँ की एक दूकान में उसे एक चित्र दिखाई पड़ा। उसे देखते ही प्रदीप चकित हो खड़ा ही रह गया। क्यों कि उस चित्र की कन्या सौ फ़ी सदी उसकी कल्पना-सुंदरी जैसी थी।

प्रदीप ने दूकानदार से पूछा–"यह चित्र किसका है? कल्पना-चित्र तो नहीं है न?"

मुखेश वर्मा

“यह विजयदुर्ग की राजकुमारी का चित्र है। कहा जाता है कि दक्षिण देश की यात्रा में एक चित्रकार ने वहाँ की राजकुमारी का चित्र बनाया था। उस राजा ने उस चित्र को लेने से इसलिए इनकार किया कि वह बढ़िया नहीं बना है। मेरी दृष्टि में चित्र अच्छा था। इसलिए मैं ने उसका मूल्य देकर खरीदा।” दूकानदार ने जवाब दिया।

प्रदीप ने उस दूकानदार को मुंह माँगा मूल्य देकर वह चित्र खरीदा। जल्द ही वह अपनी राजधानी को लौटा। वह चित्र अपने पिता को दिखाकर बोला— “यह कन्या दक्षिण देश के विजयदुर्ग की राजकुमारी है। मैं इस कन्या के साथ विवाह करना चाहता हूँ। बाक़ी सारा प्रबंध आप करवा दीजिये।”

राजा ने अपने प्रधान मंत्री से परामर्श किया। विजयदुर्ग वहाँ से काफ़ी दूर था। वहाँ पर दूत भेज कर विवाह के लिए उन्हें मनाने में ससय लग सकता था। इसलिए राजा ने यह निश्चय किया कि राजपुरोहित को भेजकर यदि विवाह के लिए वे लोग मान जावें तो प्रदीप की तलवार के साथ विजयदुर्ग की राजकुमारी का विवाह

करे और राजकुमारी को लावे। इसके बाद राजपुरोहित प्रदीप का चित्र लेकर विजयदुर्ग के लिए चल पड़ा। विजयदुर्ग के राजा और राजकुमारी ने भी इस विवाह के लिए प्रसन्नता पूर्वक स्वीकृति दी। तलवार के साथ राजकुमारी का विवाह संपन्न हुआ। विजयदुर्ग के राजा ने असंख्य उपहारों तथा एक दल के साथ राजकुमारी को ससुराल भेजा। राजकुमारी मंगला अपनी सहेलियों तथा सिपाहियों के साथ जहाँ-तहाँ पड़ाव डालते शूरसेन नगर के निकट पहुँची।

इस बीच प्रदीप के मन में अपनी कल्पना-सुंदरी को देखने की लालसा पैदा

हुई। वह मामूली पोशाकें पहन कर मंगला के पड़ाव के पास पहुँचा। वहाँ पर चारों ओर कोलाहल था। प्रदीप ने एक सिपाही के निकट पहुँच कर पूछा–"सुनो तो, राजकुमारी का डेरा कहाँ पर है? क्या में उसको देख सकता हूँ?"

सिपाही को मज़ाक सूझा। उसने कहा–"क्यों नहीं? देखते हो न, उस डेरे से आनेवाली ही राजकुमारी मंगला देवी हैं।" यह कहते उसने राजकुमारी की एक सखी की ओर इशारा किया।

उसको देखते ही प्रदीप के मन में क्रोध और विरक्ति पैदा हो गयी। उसने सोचा कि उसे धोखा दिया गया है।

प्रदीप राजमहल में लौट आया। उसने यह ताक़ीद कर दी कि किसी भी हालत में दिन के वक़्त राजकुमारी उसकी आँखों में न पड़े और रात के वक़्त शयन मंदिर में तथा बाहर भी बत्तियाँ न जलावें।

किसी की समझ में न आया कि युवराज ने ऐसी कठोर आज्ञा क्यों दी! लेकिन उसने वरण कर उस राजकुमारी के साथ विवाह कर लिया था, इस कारण से कोई भी परेशान न हुआ। मगर मंगलादेवी घबरा गयी। उसके मन में यह संदेह भी पैदा हुआ कि चित्र में जिस राजकुमार को दिखाया गया, उसे छोड़ किसी दूसरे के साथ उसका विवाह तो नहीं किया गया? इसीलिए शायद उसका पति उसकी आँख में पड़ने से बचने की कोशिश कर रहा है। फिर भी वह अपने पति की आँख बचाकर उसे देख पायी। उसकी घबराहट तो जाती रही, मगर उसका आश्चर्य बना ही रहा।

प्रदीप रात के वक़्त घने अंधकार में अपने शयन कक्ष में पहुँच जाता। मंगलादेवी के पूछने पर संक्षेप में जवाब दे देता। मुँह अंधेरे कमरे से बाहर चला

जाता और बड़ी रात गये मंगलादेवी के कमरे में लौट आता।

कई दिन बीत गये। युवराज का यह व्यवहार मंगलादेवी से सहा नहीं गया। उसके मन में यह जानने की इच्छा पैदा हुई कि आखिर उसके पति के इस तरह के व्यवहार का कारण क्या है। यह सोचकर उसने अपनी एक बूढ़ी परिचारिका की सलाह माँगी।

"यहाँ के लोग बराबर कहते हैं कि आपके सौंदर्य पर मुग्ध हो कर ही युवराज ने आपके साथ विवाह किया है। शायद यह बात सही न हो। सही हो तो युवराज आप से बचने के ऐसे प्रयत्न न करते। मुझे मालूम हुआ कि राजकुमार दिन-भर गोशाला के पास रहते हैं। आपके देखने से बचने के लिए न हो तो युवराज को मवेशीखाने के पास काम ही क्या होता है? हमें यह जानना जरूरी है कि आपको देखने पर युवराज क्या करने वाले हैं? इसके लिए हम एक उपाय करेंगी। आप मामूली पोशाकें पहनकर मेरे साथ चलिये। हम दोनों मवेशीखाने के पास चलेंगी। आप इस बात का ख्याल रखिये कि आपको देखने पर आपके पति क्या करनेवाले हैं? तब हमें असली

वैद्य ने इसे धारोष्ण दूध पिलाने को कहा है। आप की आज्ञा हो तो..." बूढ़ी की बात पूरी भी न हो पायी थी। प्रदीप अपनी आँखें विस्फारित करके देखता रह गया। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया। क्या उसकी कल्पना-सुंदरी इस बूढ़ी की नातिन है? वह अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका।

"क्यों सरकार?..." बूढ़ी का सवाल सुनकर युवराज का ध्यान बंट गया।

"धारोष्ण दूध चाहती हो? पिलाओ!" प्रदीप तुतलाते बोला।

मंगला एक गाय के पास पहुँची जिसका दूध दहा जा रहा था। अचानक वह चिल्ला पड़ी। उसके पैर में कांटा चुभ गया था।

"क्या हुआ?" प्रदीप ने घबराये हुये स्वर में पूछा। अपनी कल्पना-सुंदरी के पैर में कांटा गढ़ने की खबर सुनते ही उसकी आँखें गीली हो गयीं।

"मुझे पकड़कर खड़ी हो जाओ।" यह कह कर प्रदीप ने खुद उसके पैर का कांटा निकाला।

ग्वाले से धारोष्ण दूध लेकर पी लिया। तब उस बूढ़ी के साथ चलते हुये

रहस्य का पता लग जायगा।" बूढ़ी परिचारिका ने सलाह दी।

दूसरे दिन प्रात:काल जब प्रदीप शयन कक्ष से चला गया और राजमहल के सब लोग सो ही रहे थे, तब मंगलादेवी ने एक पुरानी साड़ी पहनकर गहने उतार दिये। बाल भी सँवारे बिना अपनी बूढ़ी परिचारिका के साथ गोशाला के पास चली गयी।

तब तक प्रदीप गोशाला के पास पहुँच चुका था। बूढ़ी परिचारिका सीधे युवराज के पास पहुँची और बोली– "सरकार, यह युवती मेरी नातिन है।

मंगला ने प्रदीप से कहा–"आज्ञा दीजिये, चलती हूँ।"

"रोज़ आओगी न? कहा जाता है कि यह इलाज चालीस दिन तक करना है!" प्रदीप ने कहा। उसके कंठ में प्यार की लहरियाँ दौड़ रही थीं।

मंगला हँसकर बोली–"जरूर आऊँगी!" यह कहकर बूढ़ी के साथ निकल पड़ी और सब की आँख बचाकर दूसरे दर्वाज़े से हो कर राजमहल में पहुँची।

उस रात को प्रदीप जब सो रहा था तब मंगला ने उसे जगाया।

"क्या बात है? क्या चाहती हो?" खीझ भरे स्वर में प्रदीप ने पूछा।

"मेरे तलुए में पीड़ा हो रही है! सवेरे पैर में कोई चीज़ चुभ गयी है। इसलिए पैर भी सूझ गया है।" मंगला ने जवाब दिया।

लाचार होकर प्रदीप ने नौकरों को दीपक लाने का आदेश दिया। दीपक लाया गया। उसकी रोशनी में उसका चेहरा देखने का युवराज ने प्रयत्न नहीं किया। पैर को देख बोला–"यह तो सूझा हुआ मालूम नहीं होता?"

"सूझा नहीं, दर्द भी नहीं। रोशनी में आपका चेहरा देखने की मैंने चाल चली।" मंगला ने हँसते हुए जवाब दिया।

प्रदीप ने दीपक की रोशनी में सर उठा कर मंगला के चेहरे को देखा। वह तो और कोई नहीं, उसकी कल्पना-सुंदरी ही है। मारे प्रसन्नता के उसे लगा कि उसके होश उड़ रहे हों।

दूसरे दिन से युवराज दिन भर अंत:पुर में ही रहने लगा। रात को उसका शयनकक्ष दीपकों की कांति से शोभायन मान रहता। आंगन में क़दम-क़दम पर दीपक जलते थे।

इस परिवर्तन का कारण किसी की समझ में न आया।

ज्ञातिभि र्वच्यते नैव, चोरेणापि ननीयते,
दानेन नक्षयं यातिः, विद्यारत्नं महाधनं । १.

विद्या निधि जैसी है। वारिस धोखा देकर उसे हड़प नहीं सकते। चोर उठा नहीं ले जा सकते और न दान देने से वह घटती है।

पुस्तकेपुच या विद्या परहस्तेच यद्नं
समयेतु परिप्राप्ते नसा विद्या, नतद्धनं । २.

केवल पुस्तकों में संगृहीत विद्या, परायों के पास का धन समय पर काम नहीं देते। इसलिए वह विद्या विद्या नहीं है और न वह धन धन ही कहलाता है!

सुखार्थी त्यजते विद्यां, विद्यार्थी त्यजते सुखं;
सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखं? ३.

जो सुख चाहता है, वह विद्या को त्याग देता है, जो विद्या चाहता है, वह सुख को त्याग देता है। सुख चाहनेवाले को विद्या और विद्या चाहनेवाले को सुख कैसे प्राप्त होंगे?

विद्वत्वंच नृपत्वंच नैवतुल्यं कदाचन;
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते । ४.

विद्वत्ता और राजयोग की कभी तुलना नहीं हो सकती। राजा का केवल देश में आदर होता है, लेकिन विद्वान का सर्वत्र आदर होता है।

विद्या

[२५]

[शिखिमुखी को जब कालीमाता की बलि देनेवाले थे तब इम्यु जाति के नेता ने उसके कंठ में कालीमाता का रक्षापदक देखा और वह चकित हो गया। असली बात से परिचित होने पर उसने पुजारी की बलि देने का आदेश दिया। मगर पुजारी पहाड़ पर भाग गया। इम्यु जाति के लोग उसे पकड़ने पहाड़ की ओर भाग खड़े हुए। इसके बाद...]

पुजारी ने देखा कि उसे बन्दी बनाने के लिए कई इम्यु आ रहे हैं। वह जरा भी विचलित न हुआ। अपने शिरस्त्राण से एक लंबा ताड़पत्र निकालकर विक्रम तथा शिखी की ओर हिलाते हुए खड़ा रह गया। उस ताड़पत्र को देख विक्रम चौंक पड़ा और उसने अपनी पोशाकों में ताड़पत्र को ढूंढ़ा। ताड़पत्र नहीं मिला।

"शिखी, जानते हो, वह हमारी तरफ़ जो ताड़पत्र हिला रहा है, वह क्या है? उसी में शिथिलालय तक पहुँचने के सारे विवरण हैं। कालीमाता के मंदिर में जो भगदड़ हुई, उस वक़्त वह ताड़पत्र मेरी पोशाकों में से नीचे गिर गया होगा। उसे दुष्ट पुजारी ने हड़प लिया है।" विक्रमकेसरी ने घबराये स्वर में कहा।

दूंगा। पहाड़ी तलहटी के पास हमारे दल के नेता नांगसोम ने तुम लोगों को बंदी बनाया था, वह बचपन में अपने बाप के साथ उस प्रदेश में गया था। वह तुम्हें रास्ता दिखा सकता है। लेकिन मेरी सलाह यह है..." ये शब्द कहते इभ्यु जाति का नेता मौन हो गया।

"इभ्यु नेता! आप अपनी सलाह जल्द बता दीजिये।" शिखिमुखी ने कहा।

"मेरे ख्याल से उस प्रदेश को दूर से देखनेवाले लोग ज़रूर हैं, मगर किसी ने भी उसके निकट जाकर शिथिलालय को नहीं देखा है! वह प्रदेश बड़ा ही भयंकर है। लोग कहते हैं कि वहाँ पर साँप, राक्षसी बिच्छू भरे हुए हैं। उस प्रदेश का नाम वृच्छिक टापू है। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम लोग उस टापू में क्यों जाना चाहते हो?" इभ्यु नेता ने पूछा।

यह सवाल शिखिमुखी को वाजिब ही लगा। विक्रमकेसरी का पता लगाने वे निकले थे, परंतु उन्हें मालूम हो गया कि बहुत समय पूर्व ही वे मर गये हैं। अब शिथिलालय देखने के विचार से विपत्तियाँ क्यों मोल लेनी हैं? शिखिमुखी ने अपना विचार विक्रम से बताया। विक्रम ने पल भर सोचकर कहा—"शिखी, मेरे दादा उस शिथिलालय

शिखिमुखी पल भर परेशान रहा। फिर संभलकर बोला—"जो हुआ, सो हुआ। अब पछताने से कोई फ़ायदा नहीं। अब हमें सोचना यह है कि हम किस उपाय से उस शिथिलालय तक पहुँच सकते हैं। हमें उस पुजारी का पीछा करना होगा। हो सके तो उसे बन्दी बनाना है।"

दोनों का वार्तालाप सुनकर इभ्यु जाति के नेता ने उन्हें हिम्मत बंधाते हुए कहा—"तुम लोग चिंता न करो। शिथिलालयवाले प्रदेश तक तुम लोग जाना चाहते हो, तो उस प्रदेश से परिचित एक-दो व्यक्तियों को तुम्हारे साथ में भेज

को देखने में असफल रहें, लेकिन मैं उसे ज़रूर देखना चाहता हूँ। मेरे दादा चाहते थे कि वहाँ पर जो अपार सोना भरा पड़ा है, उसके साथ वहाँ के अनुपम शिल्पों को भी हमारी राजधानी में लावे। हो सके तो वह काम पूरा करके मैं अपने दादा की आत्मा को शांति दिलाना चाहता हूँ।"

"तब तो मैं भी तुम्हारा साथ दूंगा। हमें इस तरह खतरों में डालनेवाले पुजारी का अंत करना होगा। अलावा इसके...... नागमल्ली ने पुजारी की चोटी काट लाने की इच्छा प्रकट की है। उसे लिए बिना मैं कैसे उसका चेहरा देख सकता हूँ।" शिखिमुखी ने उत्तर दिया।

इस पर विक्रम मुस्कुराते हुए बोला—"और क्या? उस शिथिलालय का पता लगाने में मदद देनेवाले आदमी भी हमारे साथ हैं। हम दोनों को भी अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए वहाँ पर जाना ज़रूरी भी है। वह दुष्ट पुजारी हमें उस शिथिलालय के पास ही मिल सकता है।"

"सुनो, तुम लोगों को कष्ट करने की कोई ज़रूरत नहीं। उस बदमाश को मेरे अनुचर बन्दी बनाकर हमारे पास खुद लेते आयेंगे।" इम्यु नेता ने कहा।

इम्यु नेता की बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि पुजारी के पीछे से सवरगीध अचानक सामने आया। एक बड़ी चट्टान उठाकर बोला—"इस सवरगीध के साथ रहते पुजारी साहब को कोई बन्दी नहीं बना सकता। मैं चाहूँ तो इस पहाड़ को भी तुम लोगों पर लुढ़का सकता हूँ।" यह कहते सवरगीध ने इम्यु लोगों की ओर चट्टान फेंक दी।

लुढ़ककर अपनी ओर आनेवाली चट्टान से बचकर इम्यु लोग कोलाहल करते पहाड़ पर चढ़ने लगे। पुजारी ने ताड़पत्र को अपने शिरस्त्राण में छिपा लिया।
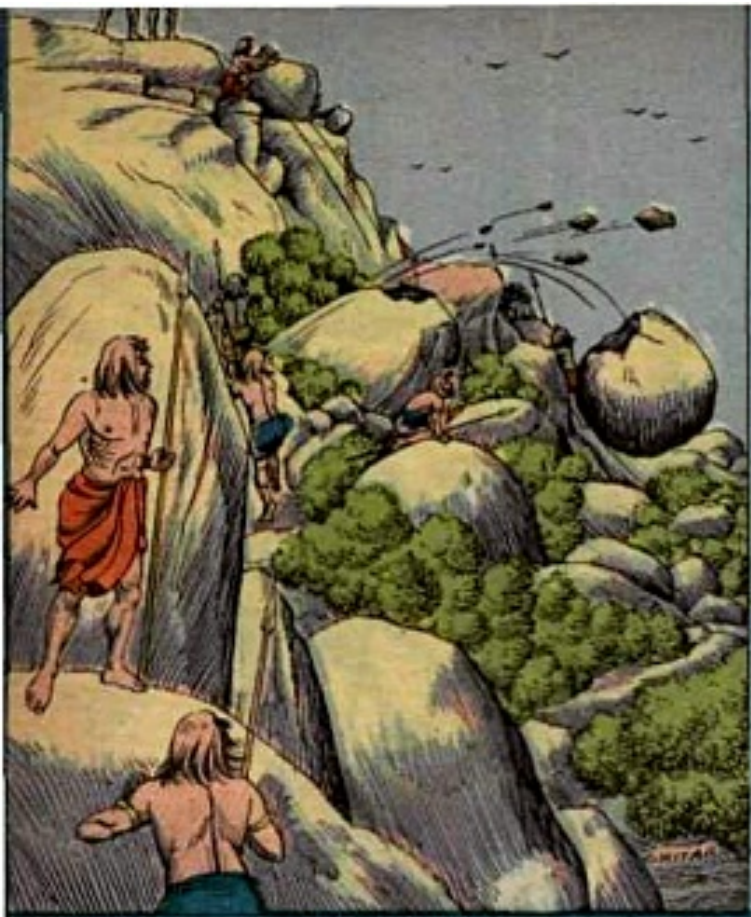
शिखिमुखी और विक्रम के मन में इस बात का जरा भी विश्वास नहीं था कि पुजारी बड़ी आसानी से उनके हाथों में आयेगा। वे दोनों अजित और बीरभद्र को चेतावनी दे पहाड़ पर चढ़ने लगे। वहाँ पहुँचकर वे लोग देखते क्या हैं, कुछ इम्यु जाति के लोग एक जगह खड़े हो पानी से भरे एक बिल की ओर ताक रहे हैं। पुजारी के दल ने उस बिल में प्रवेश करके वहाँ के पत्थरों को इस तरह हटाया जिससे पास के तालाब से पानी उस बिल में आ सके।

"यह बड़ा चालाक मालूम होता है! भागने का रास्ता पहले से ही खोज निकाला और हमें बातों में उलझा रखा।" एक इम्यु ने कहा।

"उसकी चालाकी का पता हमें खूब मालूम है! तुम लोग अब अपना वक़्त बेकार मत करो। पहाड़ के चारों तरफ़ फैलकर इस बात का पता लगाओ कि वह अपने दल के साथ किस बिल से बाहर आता है। इसके बाद एक-दो व्यक्ति उसका पीछा करके हमें सूचित करो कि वह किस रास्ते से आगे बढ़ रहा है।" विक्रम ने कहा।

तब अपने अनुचरों की ओर मुड़कर गरज उठा—"तुम सब खड़े-खड़े देखते क्या हो? इन चट्टानों को उन बदमाशों पर लुढ़काकर बिल में पहुँच जाओ।" इसके बाद पुजारी शिखिमुखी के दल से बोला—"प्राणों का मोह न हो तो तुम लोग वृच्छिक टापू में आ जाओ। वहाँ पर मैं तुम लोगों को महाशिथिलेश्वरी की बलि दूँगा। तब इस ब्रह्मपुत्र की घाटी में इम्यु महा साम्राज्य की स्थापना करके मैं सम्राट बन जाऊँगा।"

"तुम लोग देखते हो न, वह कैसा बकता है? मेरे अनुचर जरूर उसे बन्दी बनायेंगे।" इम्यु नेता ने कहा।

CHITRA
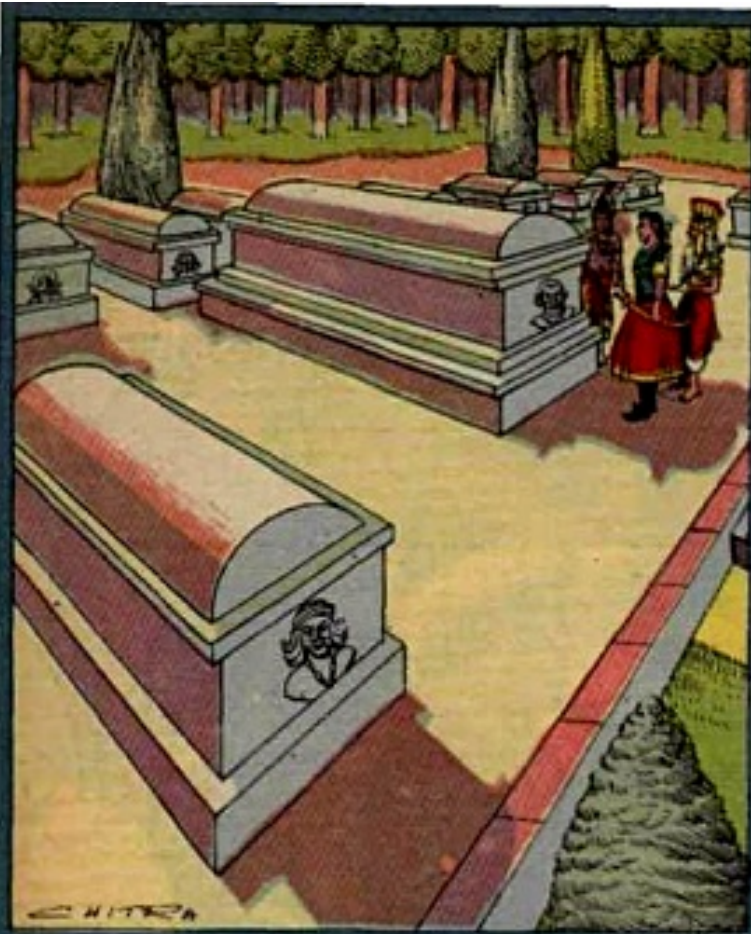
विक्रम का आदेश सुनकर इम्यु लोग पहाड़ के चारों ओर दौड़ गये। शिखिमुखी और विक्रम अपने अनुचरों के साथ पहाड़ से नीचे उतर आये, तब इम्यु नेता से उन लोगों ने सारी बातें बतायीं।

"तब तो वह हमारे हाथों से बचकर भाग गया। शिथिलालय तक पहुँचने में उसे ताड़पत्र से मदद मिलेगी। मगर तुम लोगों का क्या विचार है? तुम लोग वहाँ पर जाना जरूरी समझते हो?" इम्यु नेता ने पूछा।

"शिथिलालय का रास्ता जाननेवाले तुम्हारे दल के नेता नांगसोम को हमारे साथ भेजने को तैयार हो, तो हम जरूर वहाँ चले जायेंगे। शिथिलालय के सोने व चाँदी के प्रति हमारे मन में ज़रा भी मोह नहीं है। यदि वहाँ पर बढ़िया शिल्प हों तो हमारे साथ लाने का प्रयत्न करेंगे। सब से मुख्य बात तो यह है कि हमारे भूतपूर्व महाराजा विक्रमकेसरी की इच्छा को पूरा करके उनकी आत्मा को शांति पहुँचाना है।" शिखिमुखी ने कहा।

"चलो, उन महाराजा की समाधि तो देखो। वृच्छिक टापू तक जाने के लिए आवश्यक नावों के बारों में रात को चर्चा करेंगे।" ये बातें बताकर इम्यु नेता शिखिमुखी वगैरह को अपने पूर्वजों की समाधियों के पास ले गया।

एक विशाल प्रांगण में निर्मित दस-बारह ऊँची समाधियों को शिखिमुखी के दल ने देखा। हर समाधि पर विचित्र आकृतियों के चित्र खुदे थे। उनमें जो बड़ी समाधि थी, उसके पास पहुँचकर इम्यु नेता ने श्रद्धा के साथ नमस्कार किया और कहा–"विक्रम, यही तुम्हारे दादा महाराजा विक्रमकेसरी की समाधि है। हमारे इम्यु शिल्पी ने यथाशक्ति

उनकी आकृति को इस समाधि पर अंकित किया है। उनका रूप तुम्हें याद है न?"

विक्रमकेसरी ने समाधि पर अंकित अपने दादा के शिल्प को थोड़ी देर तक ध्यान से देखा, तब कहा-"इसमें जरा भी संदेह नहीं है। इसमें मेरे दादा की सभी रूपरेखाएँ आ गयी हैं, मैंने उनको बचपन में देखा था, फिर भी उनका रूप मुझे अच्छी तरह से याद है।"

इम्यु नेता का आदेश पाकर एक आदमी दो फूलों की मालाएँ ले आया। विक्रम तथा शिखि ने उन मालाओं को समाधि पर डालकर प्रणाम किया। इसके बाद सब लोग गाँव के बीच में स्थित गोलकुटीर में लौट आये। गोलकुटीर के पास लाल कुत्ते ने शिखिमुखी को देख उसकी परिक्रमा की। शिखिमुखी ने बड़े प्रेम से उसके सर पर हाथ फेरा।

सब लोग दुपहर का खाना खाकर बातचीत कर रहे थे, तब दो इम्यु सेवकों ने आकर सूचना दी कि पुजारी कहीं भाग गया है। बहुत ढूँढ़ने पर भी उसका पता नहीं चला। सब ने पहाड़ी प्रदेश में और नदी के तट पर भी उसकी खोज की। लेकिन वह कहीं दिखायी न दिया।

"वह उन पहाड़ों में किसी बिल में चमगीदड़ की तरह छिपा होगा। अंधेरा फैलने पर ही वह बाहर आयगा। तुम लोग अच्छी तरह से उसका पहरा रखो।" इम्यु नेता ने कहा।

उस रात को इम्यु नेता ने अपने कुछ प्रमुख साथियों से चर्चा की। शिखिमुखी के दल को वृच्छिक टापू तक पहुँचने के लिए दो नावों का इंतज़ाम करने का निश्चय किया। उनमें एक नाव शिखिमुखी के दल की यात्रा के लिए और दूसरी शिथिलालय में प्राप्त अमूल्य वस्तुओं को लाने के लिए काम में लायी जायगी।

इसके साथ उन दो नावों के पीछे एक बड़ी नाव में उनकी रक्षा के लिए एक इभ्यु दल को भेजने का इभ्यु नेता ने निर्णय किया।

दूसरे दिन सवेरे इभ्यु लोगों ने नदी में स्थित बड़ी नावों में से तीन नावों को जानवरों के चमड़ों से सी दिया। दुपहर तक यात्रा के लिए उन्हें तैयार कर दी। शिखिमुखी, विक्रमकेसरी और अजित एक नाव पर सवार हुए, इभ्यु दल का नायक और वीरभद्र दूसरी नाव पर सवार हुए। नांगसोम जिस नाव पर सवार था, उसमें एक महीने के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ रखे गये।

नांगसोम की नाव आगे आगे जा रही थी, उसके पीछे शिखिमुखी दल की नाव तथा उन दोनों के पीछे इभ्यु दलवाली नौका रवाना हुई। आगे जानेवाली दो नावें नदी में दो-तीन कोस की यात्रा करने के बाद उत्तरी दिशा से आकर नदी में मिलनेवाली एक उपनदी से होकर आगे बढ़ीं। कुछ समय बाद वे लोग एक विशाल जलसागरवाले प्रदेश में पहुँचे। उन्हें जहाँ तहाँ छोटे-छोटे टापू दिखायी देने लगे। उन टापुओं में ऊँचे पेड़ और जलपक्षी भी दीख रहे थे।

नांगसोम उस सारे प्रदेश से परिचित था। वह कई बार अपनी जाति के लोगों को साथ ले मछलियों के शिकार के लिए वहाँ गया था। उस जलाशय में बड़ी बड़ी मछलियाँ ही नहीं, बल्कि भयंकर तथा विचित्र जलजंतु भी थे। वृच्छिक टापू तक पहुंचने के लिए उन्हें अनेक छोटे-बड़े टापुओं को पार करना था।

जो लोग डांडों से नाव चलाते आगे बढ़ रहे थे, उन्होंने देखा कि पानी में उनके चारों तरफ़ बड़े-बड़े मगर-मच्छ तथा तिमिंगल की आकृतिवाली कुछ मछलियाँ भी नावों का अनुसरण करते आ रही हैं।

(और है)

निडर

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल लिया और सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन, तुम्हारी दृढ़ता प्रशंसनीय है, मगर यह न सोचो कि यह सदा क़ायम रहेगी। निडर मणिभद्र भी एक छोटी-सी बात पर विचलित हो गया था। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुमको मणिभद्र की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।"

बेताल यों कहने लगा–"गिरिव्रजपुर में एक धनी आदमी था। उसके पुत्र का नाम मणिभद्र था। बचपन में भी वह किसी बात या घटना से नहीं डरता था। उसके पिता ने सोचा कि बड़े होने पर उसे ख़ुद मालूम हो जायगा कि डर क्या चीज़ है। लेकिन ज्यों ज्यों वह बड़ा होता गया, त्यों त्यों वह ख़तरों की परवाह न करता

वेताल कथाएँ

था। सुबह से लेकर शाम तक वह खतरों का सामना करता था। अगर कोई उससे पूछता कि उन खतरों का सामना करने में तुमको डर नहीं लगता, तो उल्टे सवाल करता—"डर क्या चीज़ होती है?"

मणिभद्र के माता-पिता उसके व्यवहार को देख घबरा जाते थे। खतरों से न डरनेवाला व्यक्ति कभी न कभी खतरे में फँस सकता है। उनकी समझ में न आया कि मणिभद्र को कैसे बदले।

एक बार एक बूढ़े ने मणिभद्र के माता-पिता से बताया—"तुम लोग अपने पुत्र के बारे में चिंता न करो। तुम्हारे चिंता करने से वह थोड़े ही बदलेगा? कभी न कभी उसे खुद मालूम हो जायगा कि डर क्या चीज़ होती है! तब वह सावधान रहेगा।"

जवान होने पर मणिभद्र के मन में देशाटन करने की इच्छा पैदा हुई। उसका विचार था कि इस दुनिया में कई खतरे हैं, उन सबका सामना करना चाहिये। इसलिए वह अपने पिता की अनुमति लेकर एक सेवक को साथ ले देशाटन पर निकल पड़ा।

दोनों ने अनेक गाँव देखें। साहस का परिचय देनेवाला कोई भी मौक़ा मिलता, तो मणिभद्र चूकता न था। धीरे-धीरे उसका नाम चारों ओर फैल गया।

इस तरह देशाटन करते आखिर वे लोग एक बड़े शहर में पहुँचे। वह व्यापार का बड़ा केन्द्र था और साथ ही तीर्थस्थान था। मणिभद्र जिस वक़्त शहर में पहुँचा, तब वह शहर व्यापारियों तथा तीर्थयात्रियों से खचाखच भरा हुआ था। इसलिए मणिभद्र के ठहरने के लिए कहीं कमरा न मिला। कमरे की खोज करते समय उसे मालूम हुआ कि शहर के छोर पर एक बहुत बड़ा महल है और उसकी मालिकिन उसे छोड़कर शहर के बीच एक दूसरे मकान में रहती है।

मणिभद्र उस महल की मालिकिन से मिलने शहर के बीच के उसके मकान पर पहुँचा। उसे मालूम हुआ कि महल का मालिक मर गया है और उसकी विधवा पत्नी अपनी पुत्री के साथ रहती है।

मणिभद्र ने महल की मालिकिन से मिलकर कहा—"माँ, मैं इस शहर में थोड़े दिन बिताने के ख्याल से दूर देश से आया हुआ हूँ। मैंने सुना है कि शहर के छोर पर आपका एक उजड़ा हुआ महल है। कुछ दिन उसमें ठहरने के लिए क्या आप मुझे अनुमति दे सकती हैं?"

"बेटा, उस महल में रहने से लोग डरते हैं। तुमको कोई आपत्ति न हो, तो ख़ुशी से रह सकते हो!" मालिकिन ने जवाब दिया।

मणिभद्र अपने सेवक को साथ लेकर उस महल में पहुँचा। महल की सफ़ाई करायी। रसोई बनवा ली। खाने के बाद बेफ़िक्र सो गया।

आधी रात के वक़्त कोई आहट पाकर मणिभद्र जाग पड़ा। वह उस आवाज़ को ध्यान से सुनने लगा। तब उसे छत में से ये शब्द सुनाई पड़े—"मैं ऊपर से गिर पड़ूँ तो तुम क्या करोगे?"

"मैं कुछ नहीं करूँगा, चाहो तो तुम मेरे ऊपर ही गिर जाओ।" मणिभद्र ने जवाब दिया।

"कहाँ पर गिरूँ? धीरे से गिरूँ या टुकड़े-टुकड़े बनकर गिर जाऊँ?" फिर सुनाई पड़ा।

"तुम धूल बनकर भी गिर जाओ तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" मणिभद्र ने कहा।

मणिभद्र की बात सुनकर एक पैर धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। इसके बाद एक और पैर, एक हाथ, एक सर, इस तरह एक-एक करके शरीर के पूरे भाग मणिभद्र के चारों तरफ़ गिर पड़े।
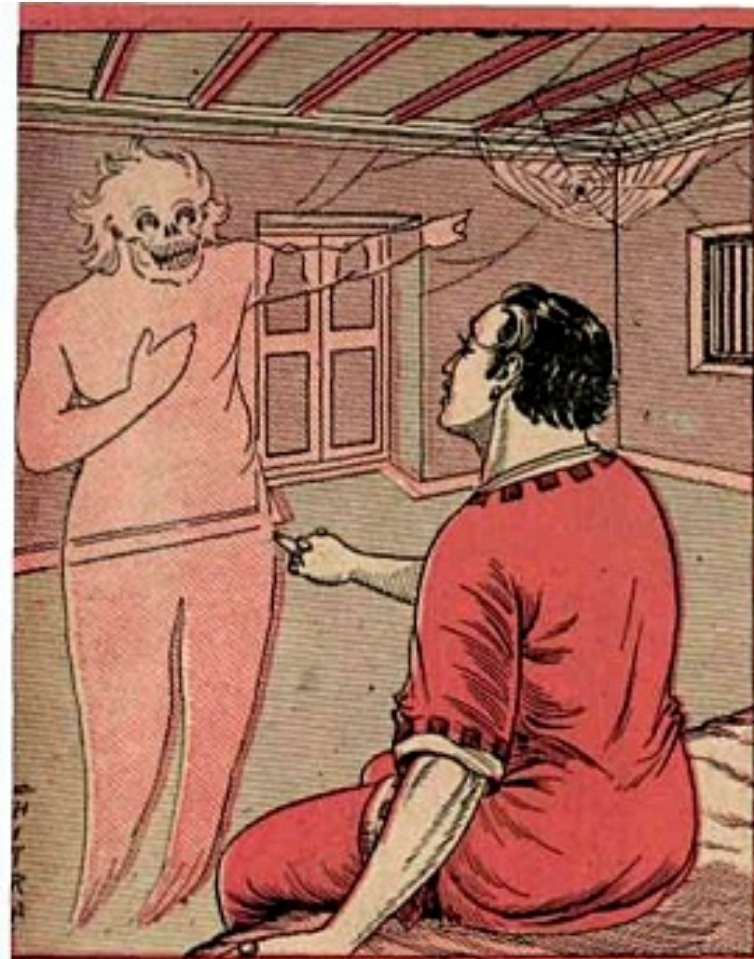
मणिभद्र ज़रा भी घबराया नहीं। वह बड़ी निड़रता के साथ बोला–"अब तुम अपना खेल बंद करो। तुम अपने शरीर के सभी हिस्सों को जोड़कर मेरे सामने खड़े हो जाओ। मुझे यह बताओ कि तुम इस महल को घेरे क्यों रहते हो और लोगों को डराते क्यों हो?"

मणिभद्र के देखते-देखते शरीर के सभी अंग जुड़ गये। एक आकृति उसके सामने खड़ी हो गयी। वह आकृति नीरस स्वर में बोली–"मैं इस महल का मालिक हूँ। मैंने अपने प्राणों के रहते एक आदमी की ज़मीन-जायदाद अन्याय पूर्वक हड़प ली है। मैंने जो काम किया, वह नीचतापूर्ण काम था। उस जायदाद को मेरी पत्नी के ज़रिये उस आदमी को दिलाने पर ही मुझे मुक्ति मिलेगी। तुम जाकर मेरी पत्नी को समझाओ और मुझे इस दुखी ज़िंदगी से छुटकारा दिलाओ।"

मणिभद्र ने उस भूत को वैसा ही करने का वादा किया, तब वह भूत गायब हो गया। सवेरा होने के पहले ही मणिभद्र उस महल की मालिकिन के घर पहुँचा। मुंह अंधेरे ही मणिभद्र को अपने घर आये देख मालिकिन ने सोचा कि उजड़े हुए महल में उसने कोई खतरा देखा होगा। इसलिए डरकर भाग आया होगा। लेकिन मणिभद्र की बातें सुनने पर महल की मालिकिन खुशी से फूली न समायी।

"उस महल में भूत बनकर घूमनेवाले मेरे पतिदेव ही हैं! उन्होंने जिस आदमी की जायदाद हड़पने की बात बतायी, मैं उसको जानती हूँ। बेचारे वे लोग गरीबी से तड़प रहे हैं। मैं उनकी जायदाद तुरंत दे देती हूँ। सचमुच तुम बड़े हिम्मतवर हो! इसीलिए मेरे पति को विमुक्ति मिलनेवाली है। बेटा, चाहे तुम किसी देश के क्यों न हो, तुमने मेरे परिवार का

भला किया। मैं अपनी लड़की के साथ तुम्हारा विवाह कर देती हूँ। तुम हमारे साथ सुखपूर्वक यहीं रह जाओ। कहीं मत जाओ।" मालिकिन ने समझाया।

मालिकिन की लड़की बड़ी सुंदर और बुद्धिमति थी। मगर मणिभद्र के मन में साहसी कार्य करने की लालसा थी। इसलिए वह कहीं टिकना न चाहता था।

"मुझे क्षमा कीजियेगा। मैं किसी एक जगह टिक नहीं सकता। खतरों की खोज में जानेवाले व्यक्ति को ब्रह्मचारी बने रहना ही उचित होगा।" मणिभद्र ने जवाब दिया।

मालिकिन की पुत्री दो कबूतरों को पालती थी। उसने अपनी यादगारी के लिए उन कबतरों के साथ पिंजड़े को मणिभद्र को भेंट में दिया।

माँ-बेटी से विदा लेकर मणिभद्र अपने सेवक के साथ उस शहर से चल पड़ा। चलते-चलते वे लोग दुपहर तक एक सुंदर वन में जा पहुँचे और पेड़ों की छाया में आराम करने लगे।

उस वक़्त सेवक ने मणिभद्र से कहा— "इन कबूतरों को देखिये। आज़ादी के लिए कैसे छटपटा रहे हैं? हमें इनको अपने साथ क्यों ले जाना है?"

"तुम ठीक कहते हो!" ये शब्द कहते मणिभद्र ने पिंजड़ा खोल दिया। तुरंत कबूतर बाहर आ गये और मणिभद्र के चेहरे के सामने ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ा कर उड़ गये। कबूतरों के पँखों की फड़फड़ाहट सुनकर मणिभद्र का कलेजा काँप उठा। पलभर के लिए वह डर भी गया।

बस! उसी वक़्त उस में बड़ा परिवर्तन हो गया। देशाटन और साहसी कार्य करने की उसकी इच्छा जाती रही। मणिभद्र मालिकिन के पास लौट आया। उसकी पुत्री से विवाह करके स्थाई रूप से वहीं बस गया। अपने पुत्र में इस परिवर्तन को देख मणिभद्र का पिता भी खुश हुआ।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा—"राजन, बड़े-बड़े साहसी कार्य करके निडरता के साथ खतरों का सामना करने वाला मणिभद्र कबूतरों को देख क्यों डर गया? इस सवाल का जवाब जानते हुए भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने जवाब दिया—"यह सोचना भारी भूल है कि डर खतरे के कारण ही होता है। यह सोचना भी गलत है कि साहसी कार्य करनेवाले सभी लोग निडर होते हैं। महान योद्धा भी डर सकता है। डर का जिसे अनुभव न हो, वह बड़े से बड़े खतरों का सामना कर सकता है। खतरे की हालत से अपरिचित अवस्था में भय पैदा होता है। कबूतर साधु प्रकृति के हैं, मगर वे अपने पंखों से असाधारण ध्वनि कर बैठते हैं। ऐसी ध्वनि अचानक चेहरे के सामने होते देख मणिभद्र डर गया है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

बलिदान

गांधार देश में एक नदी बहती थी। कहा जाता था कि हर साल वह नदी चालीस लोगों की बलि लेती है। लोग तरह-तरह से नदी की बलि हो जाते थे। नदी के किनारे लोगों के चलते समय अचानक नदी में बाढ़ आ जाती और लोगों को बहा ले जाती। कभी लोगों के नदी में नहाते समय हठात् भँवर पैदा होता और लोग उसमें फँसकर मर जाते। नदी पर जहाँ-तहाँ पुल थे, उन पुलों पर लोगों के पार करते समय वे टूट जाते। इसलिए लोग उसे पिशाचिनी नदी पुकारते थे।

हर साल वह नदी चालीस लोगों की बलि लेती, मगर वही नदी गांधार देश की प्रजा के लिए आधारभूत भी थी। उस नदी के नहरों से खूब फ़सल होती। उसके पानी से सैकड़ों तालाब भर जाते। इस तरह सिंचाई की सुविधा हो जाती थी।

लोगों का विश्वास था कि पिशाचिनी नदी कोई देवी है। वह मनुष्यों की बलि लेकर प्रजा का उपकार करती है।

कुछ समय बाद गांधार देश की गद्दी पर गिरिवर्मा नामक राजा बैठा। उसे हर साल चालीस लोगों की पिशाचिनी नदी की बलि होना बिलकुल पसंद न आया। इसलिए उसने आदेश जारी किया कि पिशाचिनी नदी में कोई स्नान न करे, उसके पुलों पर लोग न चले और उसके किनारे कोई न चले और न अपने घर बसाये। लोग राजा के प्रति भक्ति करते थे। इसलिए सब ने उसके आदेश का पालन किया।

इसके परिणाम स्वरूप नदी में लोगों की बलि रुक गयी। दो साल तक उस नदी में कोई न गिरा।

तीसरे साल वह नदी बिलकुल सूख गयी। पहाड़ों पर बरसात तो हुई, मगर

रमा खोसला

नदी में एक बूंद भी पानी न आयी। गरमी के दिनों में पहाड़ों पर बर्फ़ पिघल गयी, बाक़ी सभी नदियों में बाढ़ आयी, लेकिन पिशाचिनी नदी में पानी न आया।

चौथे साल के शुरू होते ही सारे तालाब सूख गये। खेतों के लिए बिलकुल पानी न रहा। पीने को भी पानी न था। सभी खेत सूख गये। फ़सलों से हरे-भरे दीखने वाला सारा देश रेगिस्तान जैसा मालूम होने लगा। उससे धूल उठ कर इस तरह फैल गयी, मानों रेगिस्तान चारों तरफ़ फैलता जा रहा हो!

देश में भयंकर अकाल पड़ गया। राजा गिरिवर्मा घबरा गया। यह जानने के लिए वह अपने दल को साथ ले चल पड़ा कि नदी में पानी क्यों न आया। पिशाचिनी नदी पहाड़ों से निकल कर बहती थी। जहाँ वह मैदान में पहुँच जाती थी, वहाँ पर एक घाटी में बड़ी चट्टान धारा को रोके पड़ी हुई थी। उसे हटाने से नदी पहले की तरह बह सकती थी। मगर पहाड़ जैसी उस बड़ी चट्टान को कौन हटा सकता है? कैसे हटा सकता है? यही सवाल था।

"महाराज, इस चट्टान को खड़ी करने वाली शक्ति मानवों की नहीं, बल्कि
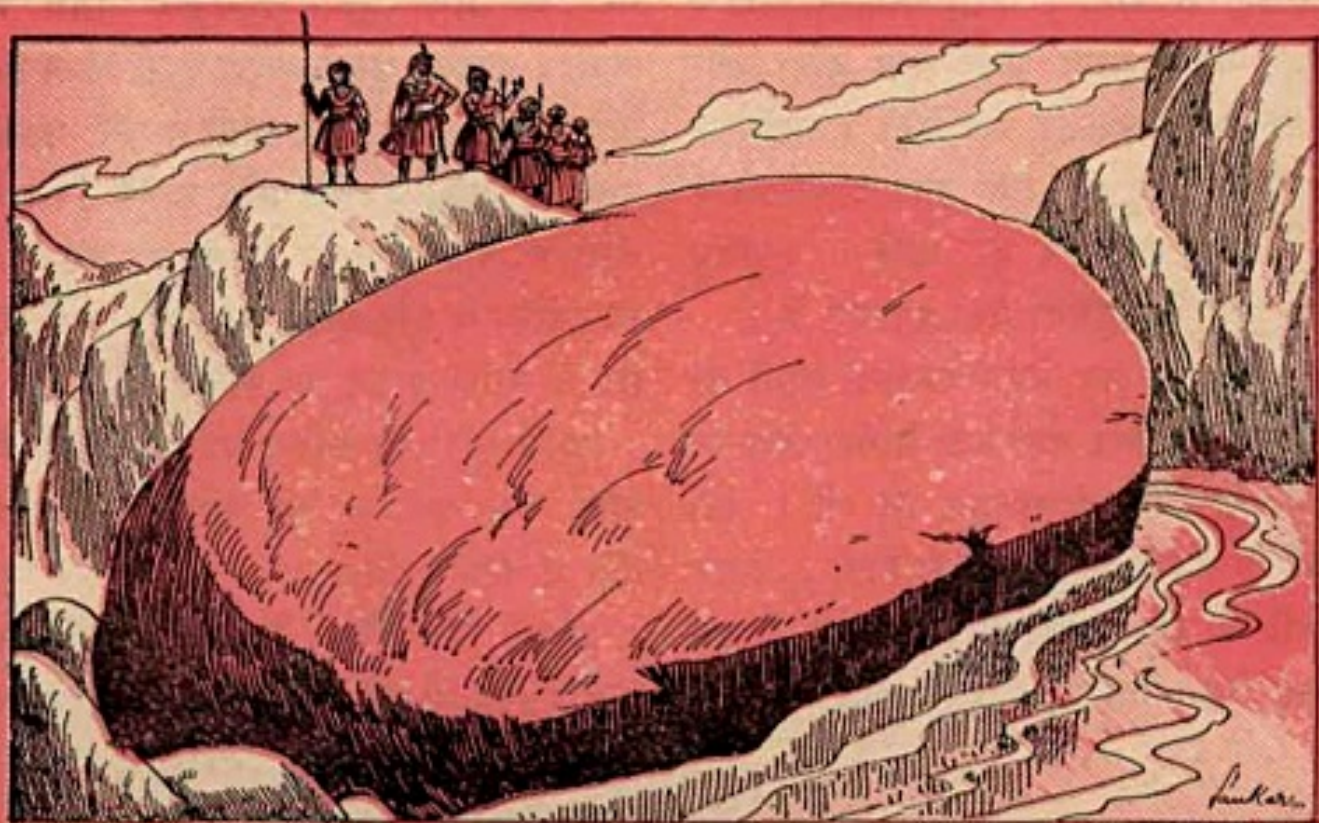
पिशाचिनी माता की है। आप उसी देवी की प्रार्थना कीजिये। उनकी कृपा से यह चट्टान हट सकती है।" मंत्रियों ने राजा को सलाह दी।

राजा गिरिवर्मा ने अकेले पहाड़ पर चढ़कर पिशाचिनी नदी की देवी से प्रार्थना की—"नदी माता! तुम चाहे तो मेरी बलि ले लो। मैं नहीं रोकूँगा। लेकिन मेरी प्रार्थना यही है कि मेरे देश को रेगिस्तान होने से बचा लो। लोगों के भूखों मर जाने से तुम्हारा क्या लाभ होगा?" ये शब्द कहते राजा ने आँसू बहाये।

इसके बाद राजा वहीं पर आराम करने लेट कर सो गया। उसने एक सपना देखा। सपने में एक अपूर्व शक्ति ने दर्शन देकर कहा—"राजन, तुम यह चाहते हो कि मैं पुनः तुम्हारे देश में पैर रखूं, तो मेरे लिए मामूली बलि पर्याप्त नहीं है। इस बार तुम चालीस पंडितों की मुझे बलि दे दो, तब मैं प्रसन्न हो जाऊँगी।" यह कह कर वह शक्ति गायब हो गयी।

राजा चौंक कर उठ बैठा। उस शक्ति की इच्छा जानकर वह घबरा उठा। आज तक अपने अधिकार का उपयोग कर के राजा ने नदी के लिए लोगों की

बलि होते रोक दिया था। आज उसी अधिकार का प्रयोग कर चालीस पंडितों को कैसे आदेश दे सकता है कि तुम लोग नदी माता की बलि हो जाओ?

इसी चिंता को लेकर राजा अपनी राजधानी को लौटा। उसने अपने राज्य के श्रेष्ठ पंडितों को बुलाने का मंत्रियों को आदेश दिया।

तीसरे दिन तक कई पंडित राजा की सेवा में हाजिर हुये। राजा ने सब को गिनकर देखा। कुल इकतालीस पंडित थे। जरूरत से ज्यादा एक पंडित था।

राजा ने पंडितों से कहा—"पंडितो, आप लोग जानते हैं कि पिशाचिनी नदी के सूख जाने से हमारे देश में भयंकर अकाल आ पड़ा है। मैं ने नदी देवी की प्रार्थना करके उससे एक वरदान पाया है। देवी ने बताया है कि चालीस पंडितों की बलि देने से वह हम पर कृपा करेगी। आप लोगों में अगर कोई देश के वास्ते बलि होने को तैयार हो तो देश का महान उपकार होगा।"

राजा ने किसी भी पंडित को बलि हो जाने की आज्ञा नहीं दी।

राजा की बातें सुनकर सब पंडितों के चेहरे पीले पड़ गये। इसके बाद एक एक करके बचने का बहाना बताने लगे।

"मैं बलि होने को तैयार हूँ, लेकिन मेरे सभी बच्चे छोटे-छोटे हैं। मेरे बगैर वे अनाथ हो जायेंगे..." एक पंडित ने कहा।

"मैंने हाल ही में शादी की है। मेरी पत्नी गर्भवती..." दूसरे ने कहा।

इस तरह सबने कोई न कोई बहाना बताया और कोई भी बलि होने को तैयार न हुआ। मगर अंत में भगीरथ शर्मा ने राजा से कहा—"महाराज, मैं बलि होने को तैयार हूँ। आप नदी देवी से प्रार्थना

कीजिये कि मेरे अकेले की बलि लेकर वह तृप्त हो जाय। हो सकता है कि देवीजी का अनुग्रह हमें प्राप्त हो जाये।"

राजा ने उस पंडित को सर झुकाकर नमस्कार किया और कहा–"आपकी प्रार्थना सुनकर नदी देवी पहाड़ से उतर आ जाये तो आपका यश सदा के लिए शाश्वत रह सकता है। अब आप हो आइये।"

भगीरथ शर्मा पहाड़ के पास पहुँचा। उसके साथ शिष्टाचार के लिए बाक़ी चालीस पंडित भी चल पड़े। पहाड़ के पास पहुँचते ही चालीस पंडित रुक गये और भगीरथ शर्मा पहाड़ पर चढ़ गया।

नीचे खड़े होकर चालीस पंडितों ने ऊपर देखा। उनके सामने दूर पर एक भारी चट्टान खड़ी हुई है। उसके पीछे नदी की धारा रुकी पड़ी है। नीचे खड़े चालीस पंडित इस बात की चर्चा करने लगे कि भगीरथ शर्मा कैसी प्रार्थना करेगा। वह कैसे नदी की बलि होगा? उसकी प्रार्थना पर क्या वह भारी चट्टान हट जायगी?

इतने में पहाड़ के ऊपर एक भयंकर आवाज़ हुई। देखते-देखते वह आवाज़ बढ़ती गयी। अचानक वह चट्टान हिल उठी, पहाड़ की घाटी से टकरा कर बड़ी तेजी के साथ लुढ़कते-लुढ़कते बिजली की भांति उन चालीस पंडितों पर गिर पड़ी।

चालीस पंडितों में से एक की भी जान न बची। भगीरथ शर्मा सकुशल पहाड़ पर से उतर आया।

पिशाचिनी नदी पहले की तरह बहने लगी। लोगों ने उस नदी की पूजा की। राजा ने मरे हुए चालीस पंडितों के परिवारों को दिल खोलकर इनाम दिये और उनकी जीविका के लिए उचित प्रबंध भी किया।

विदूषक

एक राजा ने अपने दरबार में एक विदूषक को नियुक्त करना चाहा। इसलिए उसने यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि विदूषक के पद के लिए जो लोग होड़ लगाना चाहते हैं, वे सब अमुक दिन दरबार में हाजिर हो जावें। उस दिन सैकड़ों विदूषक सभा में हाजिर हुए।

राजा ने उनके सामने यह सवाल रखा–"तुम लोगों में से जो व्यक्ति स्वयं हँसे बिना दूसरों को हँसा सकता है, वही सच्चा विदूषक होगा। यह बात मन में रखकर जो दरबारी विदूषक बनना चाहते हैं, वे एक एक करके इस दरबार के लोगों को हँसाने की कोशिश करें।"

एक एक ने उठ खड़े होकर अपना हास्य प्रस्तुत किया। सभी श्रोता प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले ही थे, इसलिए उनमें से एक भी हँसता न था।

सबसे अंत में एक नाटा आदमी उठ खड़ा हुआ। सब आश्चर्य के साथ उसकी ओर देखने लगे कि न मालूम यह कैसा हास्य प्रस्तुत करेगा। वह कुछ भी नहीं बोला। सबकी ओर देखते चुपचाप खड़ा रह गया। उसका उद्देश्य क्या है, किसी की समझ में न आया। सब ने सोचा कि उसके व्यवहार पर राजा को क्रोध आयेगा और उसे दण्ड देगा।

नाटा आदमी चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते बड़ी देर तक वैसा ही खड़ा रहा। इस पर दरबारियों में से एक ने कहा–"वाह, तुमने बड़ा अच्छा हास्य किया, अब जाकर अपनी जगह बैठ जाओ।" नाटा आदमी चुपचाप अपने आसन की ओर बढ़ा।

राजा ठठाकर हँस पड़ा। तुरंत सभी दरबारी हँस पड़े। आख़िर राजा ने उसी नाटे आदमी को अपने दरबारी विदूषक नियुक्त किया।

बदसूरत दुलहिन

पुराने जमाने में एक बड़ा शक्तिशाली राजा था। उसके एक ही पुत्री थी। वह बड़ी बदसूरत थी। मगर वह अपने पिता की दृष्टि में अपूर्व सुंदरी थी। क्यों कि राजा अपनी लड़की को प्राणों से ज्यादा प्यार करता था। पिता को उसे बहुत सुंदर बताते देख वह भी खुद सोचने लगी कि वह एक अपूर्व सुंदरी है। राजा की बात का तिरस्कार करने की हिम्मत किसी दरबारी में न थी। इसलिए सब कोई राजकुमारी की सुंदरता की तारीफ़ के पुल बांध देते थे।

धीरे-धीरे राजकुमारी शादी के योग्य हो गयी। राजा ने अपनी पुत्री का विवाह करने का निश्चय किया और दूर देश के एक राजकुमार को योग्य दामाद चुना। वह राजकुमार योग्य और बुद्धिमान था। उसके पिता ने कुछ राजनैतिक कारणों से इस संबंध को अनुकूल माना और राजकुमार को इस विवाह के लिए मनवाया। राजकुमार ने किसी राजकुमारी से प्यार नहीं किया था। अलावा इसके उसके पिता ने जो संबंध निश्चित किया, उसके बारे में यह अफ़वाह थी कि राजकुमारी बड़ी सुंदर है।

मगर जब राजकुमार ने स्वयं अपनी होनेवाली दुलहिन को देखा, तब उसका शरीर एकदम कांप उठा। उस युवती के साथ बैठने को भी उसका मन न माना।

राजा ने पूछा–"राजकुमारी के साथ बैठने में संकोच क्यों करते हो?"

"ओह, क्या बताऊँ? राजकुमारी के अद्भुत सौंदर्य को देखते ही मेरी आँखें चौंधिया गयीं। मुझे क्षमा कर दीजिये।" राजकुमार ने कहा।

निरंजन राय

"यह तो तुम्हारी होनेवाली पत्नी है। संकोच करने से काम कैसे चलेगा?" राजा ने कहा।

"ऐसी सुंदरी के साथ मैं विवाह नहीं कर सकता। मैं उसके योग्य नहीं हूँ। आप बुरा न माने!" राजकुमार ने कहा।

विवाह के निश्चय होने के बाद वर का पीछे हटते देख राजा का क्रोध भड़क उठा। लेकिन इतने में राजकुमारी ने आकर अपने पिता से कहा—"अगर राजकुमार मेरे सौंदर्य के योग्य नहीं है, तो मैं एक पंडित से विवाह करूँगी।" इस पर राजा ने अपने दरबार के एक पंडित को बुलाकर कहा—"सुनो, हमारे देश में तुम से बढ़कर कोई पंडित नहीं है। इसलिए तुम्हीं राजकुमारी से विवाह करो।"

पंडित ने कांपते हुये कहा—"महाराज, यह कैसे मुमकिन है? मैंने पहले ही एक युवती के साथ विवाह कर लिया है। मेरे बच्चे भी हैं। मैं एक उत्तम वंश का ब्राह्मण हूँ। मुझे वर्णांतर विवाह करने को बाध्य करना आप के लिए उचित नहीं है।"

"पंडितजी, शास्त्र यह बताते हैं कि ब्राह्मण चारों वर्णों की कन्याओं के साथ विवाह कर सकते हैं।" मंत्री ने समझाया।

"इसका तुम क्या जवाब दोगे? राजकुमारी एक पंडित से विवाह करना चाहती है। उसकी इच्छा मेरी आज्ञा के समान है। तुमको इसका उल्लंघन नहीं करना चाहिए।" राजा ने कठोर स्वर में कहा।

"महाराज, आप मुझे क्षमा कर दीजिये। यह विवाह मैं नहीं कर सकता। आपकी आज्ञा का पालन न करने के अपराध में चाहे आप जो भी दण्ड मुझे दीजिये। मैं खुशी से भोगने के लिए तैयार हूं।" पंडित ने विनती की।

"कल सवेरे तक तुम मेरे देश को छोड़कर चले जाओ। यही तुम्हारे लिए सज़ा है।" राजा ने क्रोध में आकर कहा।

राजकुमार को लगा कि हालत बड़ी नाज़ुक हो गयी है। हो सकता है कि राजा उसे भी दण्ड दे। यह सोचकर राजकुमार ने कहा–"महाराज, राजकुमारी का विवाह होना ही चाहिए। होगा भी। इसके लिए मैं एक सुझाव देता हूँ। आपको पसंद आवे तो आप वैसा कर सकते हैं।"

"कहो तो, क्या है?" राजा ने पूछा।

"क्षत्रियों को निमंत्रण देकर उनके साथ द्वन्द्व युद्ध करवा दीजिये। जो क्षत्रिय सबको हरायेगा, वह राजकुमारी के साथ विवाह करेगा। इस प्रतियोगिता में मैं भी भाग लूंगा।" राजकुमार ने कहा।

राजा को यह सुझाव पसंद आया। उसने नगर के सभी क्षत्रिय युवकों को निमंत्रण देकर उनके बीच द्वन्द्व युद्ध का प्रबंध किया। सब युवक हाथों में तलवार लिये द्वन्द्व युद्ध करने लगे। बड़ी देर तक द्वन्द्व युद्ध चलता रहा, मगर एक भी युवक घायल न हुआ।

यह देखकर राजा ने कहा—"तुममें से पहले जो घायल होगा, वह मेरी पुत्री के साथ विवाह करेगा।"

द्वन्द्व युद्ध में तीव्रता आ गयी। हर कोई घायल होने के पहले अपने प्रतिद्वन्द्वी को घायल करने का प्रयत्न करने लगा। पल भर में सब युवक घायल हो गये। यह साबित न हो पाया कि उनमें पहले कौन घायल हुआ है। सब ने यही बताया कि सब से पहले उसका प्रतिद्वन्द्वी घायल हो गया है।

यह दृश्य देख राजकुमारी ने कहा—"पिता जी, मेरी सुन्दरता से घबरानेवाले इन युवकों के साथ मैं विवाह कैसे कर सकती हूँ? इससे अच्छा यही है कि मैं विवाह ही न करूँ?"

उस वक़्त दरबारी गायक का स्वर एक कोने से सुनाई पड़ा—"महाराज, मेरी एक प्रार्थना है।"

"कैसी प्रार्थना है, तुम्हारी?" राजा ने खीझकर पूछा।

"मैं जन्म से अंधा हूँ। अविवाहित हूँ। राजकुमारी के सौंदर्य को देख खुश होने या डरने का भय मुझे बिलकुल नहीं है। इसलिए मेरे साथ राजकुमारी का विवाह करके मेरा उद्धार कीजिये। आपका बड़ा पुन्न होगा।" गायक ने कहा।

राजकुमारी उस अंधे गायक के साथ विवाह करने को तुरंत तैयार हो गयी। राजा ने बिना संकोच के उन दोनों का विवाह किया। वे दोनों बड़े प्रेम के साथ अपने दिन बिताने लगे।

घमण्ड का नतीजा

पुरुषपुर के राजा के सौदामिनी नामक एक पुत्री थी। इकलौती बेटी होने के कारण वह लाड़-प्यार में पली। वह बड़ी खूबसूरत भी थी। इसलिए वह हठीली और घमण्डी बन गयी।

सौदामिनी जब अट्ठारह साल की हुई, तब राजा ने उसका विवाह करना चाहा। राजा ने अनेक राज्यों के राजकुमारों को देखा। आखिर उसने मणिपुर के राजकुमार चित्राश्व को अपनी पुत्री के योग्य वर निश्चित किया। वर-वधू परस्पर देखकर पसंद करने के ख्याल से राजा ने चित्राश्व को पुरुषपुर में आने का निमंत्रण भेजा। दोनों के पसंद करने के बाद राजा ने मुहूर्त का निर्णय करना चाहा।

लेकिन राजा की इच्छा पूरी नहीं हुई। हठीली तथा घमण्डी सौदामिनी ने अकारण ही चित्राश्व का अपमान किया। उसने क्रोध में आकर सौदामिनी की निंदा करते हुए कहा—"ऐसी घमण्डी तुम खाने के लिए भी तरसोगी। गंदला पानी पिओगी, ऊबड़-खाबड़ जमीन पर सोओगी, तभी जाकर तुम्हारा घमण्ड चूर हो जायगा।" ये बातें कहकर राजकुमार अपने दल के साथ मणिपुर लौट गया।

सौदामिनी ने सोचा कि अतिथि राजकुमार ने उसका अपमान किया, इसलिए उसका पिता सौदामिनी का ही समर्थन करेगा। मगर उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। क्योंकि राजा ने उसे ही कठोर दण्ड दिया। उसने सौदामिनी से कहा—"तुम्हारी वजह से मेरा बदनाम हो गया है, मैं तुमको अपने राज्य से बहिष्कृत कर देता हूँ।"

इसके बाद राजा ने सौदामिनी को अपने राज्य की सीमा के पार भेज दिया।

गणेश वर्मा

राजभट सौदामिनी को सीमा-पार छोड़कर वापस चले गये।

अपनी इस बुरी हालत पर सौदामिनी आँसू बहाते एक पेड़ के नीचे बैठ गयी। उसे लगा कि अगर वह कोई भारी गलती कर न बैठती तो उसका पिता उसे इस तरह का कठोर दण्ड न देता। इस विचार ने सौदामिनी के मन में ज्ञानोदय कराया।

सौदामिनी बैठे रो ही रही थी कि उधर से कोई बूढ़ा आ निकला। सौदामिनी को देख वह रुक गया और पूछा–"बेटी, तुम कौन हो? यहाँ पर बैठे रोती क्यों हो?"

बड़ों की परवाह तक न करनेवाली सौदामिनी को वह बूढ़ा साक्षात् देवता-सा लगा। उसने अपनी सारी कहानी सुनायी।

"बड़े-बड़े राजा व धर्मात्मा भी कभी-कभी कठिनाइयों में फँस जाते हैं। यह सब भाग्य का फेर है। क्या करें? मैं अपने देश जा रहा हूँ। अगर तुमको कोई आपत्ति न हो तो मेरे साथ चलो।" बूढ़े ने समझाया।

सौदामिनी बड़ी खुशी से वृद्ध के साथ चल पड़ी। लेकिन उसे पैदल चलने की आदत न थी। थोड़ी दूर चलने पर उसके पैरों में छाले पड़ गये। वृद्ध उसके प्रति

बराबर सहानुभूति दिखाता रहा। जब भी वह आराम चाहती, वह उसे किसी पेड़ के नीचे आराम करने की सलाह देता। सौदामिनी ने सोचा कि उस वृद्ध जैसा दयावान आदमी सारी दुनिया में ढूंढे भी न मिलेगा!

सौदामिनी को भूख लगी। तब वृद्ध ने अपनी पोटली से निकालकर उसे चिउड़े और गुड़ दिये। उसे खाते सौदामिनी को रोना आया। "बेटी, अगर तुमको सचमुच भूख लगी हो, तो ये ही चीजें तुम्हें अमृत जैसी मालूम होंगी। कहा जाता है कि भूख स्वाद को नहीं जानती।" वृद्ध ने समझाया।

सौदामिनी को लगा कि वृद्ध का कहना सही है।

सौदामिनी को अब प्यास लगी। पास के एक गड्ढे में गंदला पानी था। सौदामिनी ने पूछा—"यह पानी मैं कैसे पिऊँ?"

"यदि तुमको बड़ी प्यास न हो तो देखेंगे, आगे कहीं अच्छा-सा पानी मिले!" वृद्ध ने कहा। "प्यास क्यों नहीं? जीभ सूखती जा रही है!" सौदामिनी ने कहा।

"तब तो यही पानी पी लो, बेटी! अब कोई चारा नहीं है।" वृद्ध ने कहा।

चलते-चलते रात हो गयी। थकावट के मारे सौदामिनी को नींद आने लगी।

"सोने के लिए कहीं अच्छी जगह मिल जावें तो अच्छा होगा।" सौदामिनी ने वृद्ध से कहा।

"यह सारी जगह सोने की है! नींद सुख नहीं जानती, बेटी!" बूढ़े ने कहा।

उस रात को सौदामिनी उसी ऊबड़-खाबड़ जमीन पर सो गयी।

इस तरह वे दोनों दो-तीन दिन की यात्रा करके मणिपुर के राज्य में जा पहुँचे।

"बेटी, तुम और ज्यादा यात्रा नहीं कर सकती हो! हम दोनों इसी देश में

रह कर अपना पेट पालेंगे। क्या तुम कोई हुनर जानती हो?" बूढ़े ने सौदामिनी से पूछा।

"मैं सिर्फ़ एक ही हुनर जानती हूँ। वह कपड़ों पर कसीदा काढ़ने की हुनर है। इस हुनर में मैं अच्छी योग्यता रखती हूँ।" सौदामिनी ने जवाब दिया।

वृद्ध व्यक्ति सौदामिनी को राजमहल में ले गया। उसने एकांत में जाकर वहाँ के लोगों से बातें कीं, तब लौटकर कहा—"तुम यहाँ पर काम करना चाहती हो तो दासी का काम मिल सकता है। कहते हैं, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, इसलिए मुझे कोई काम नहीं मिल सकता। तुम्हारा क्या विचार है?" बूढ़े ने कहा।

सौदामिनी ने दासी का काम करने को मान लिया। उसे राममहल में काम दिया गया। रहने के लिए एक मवेशीखाना दिया गया। उसी में सौदामिनी के साथ बूढ़ा भी रहने लगा।

सौदामिनी को राजमहल में किसी ने नहीं पहचाना, मगर उसे सुबह से लेकर शाम तक काम करना पड़ा। दोनों जून उसने राजमहल में ही अन्य नौकरों के साथ भोजन किया। वह रात को थक कर झोंपड़ी में लौट आयी। उसने देखा कि बूढ़ा बड़ी निराशा में बैठा है।

"खाना खा लिया? दिन भर तुमने क्या किया?" सौदामिनी ने बूढ़े से पूछा।

"काम की खोज में दिन-भर घूमता रहा। मुझे खाना तक नहीं मिला। मुझे काम कौन देगा?" बूढ़े ने जवाब दिया।

सौदामिनी को बड़ा दुख हुआ। इस वक़्त उसके लिए माता-पिता, बंधु और रक्षक सब कुछ वही बूढ़ा है। इसलिए दूसरे दिन भोजन के वक़्त सौदामिनी ने घर लौटने का प्रयत्न किया। लेकिन उसे अनुमति नहीं मिली। उस रात को घर लौटते समय ले जाने के लिए थोड़ा-सा भोजन चुरा कर सौदामिनी ने एक कोने में छिपाया। इसका पता लगा कर एक दासी ने यह बात राजमाता से कह दी।

"तुम पर रहम खाकर हमने राजमहल में क़दम रखने दिया तो तुम खाने की चोरी भी करने लग गयी?" राजमाता ने सौदामिनी को डांट बतायी।

अपमान से दबी सौदामिनी रोने लगी। इतने में सौदामिनी को ये बातें सुनाई पड़ीं–"माँ! जाने भी दो, बेचारी ने भूल से यह काम किया है। माफ़ कर दो।" सौदामिनी ने सर उठाकर देखा तो उसे चित्राश्व दिखाई दिया। उसके चेहरे पर दया की भावना झलक रही थी।
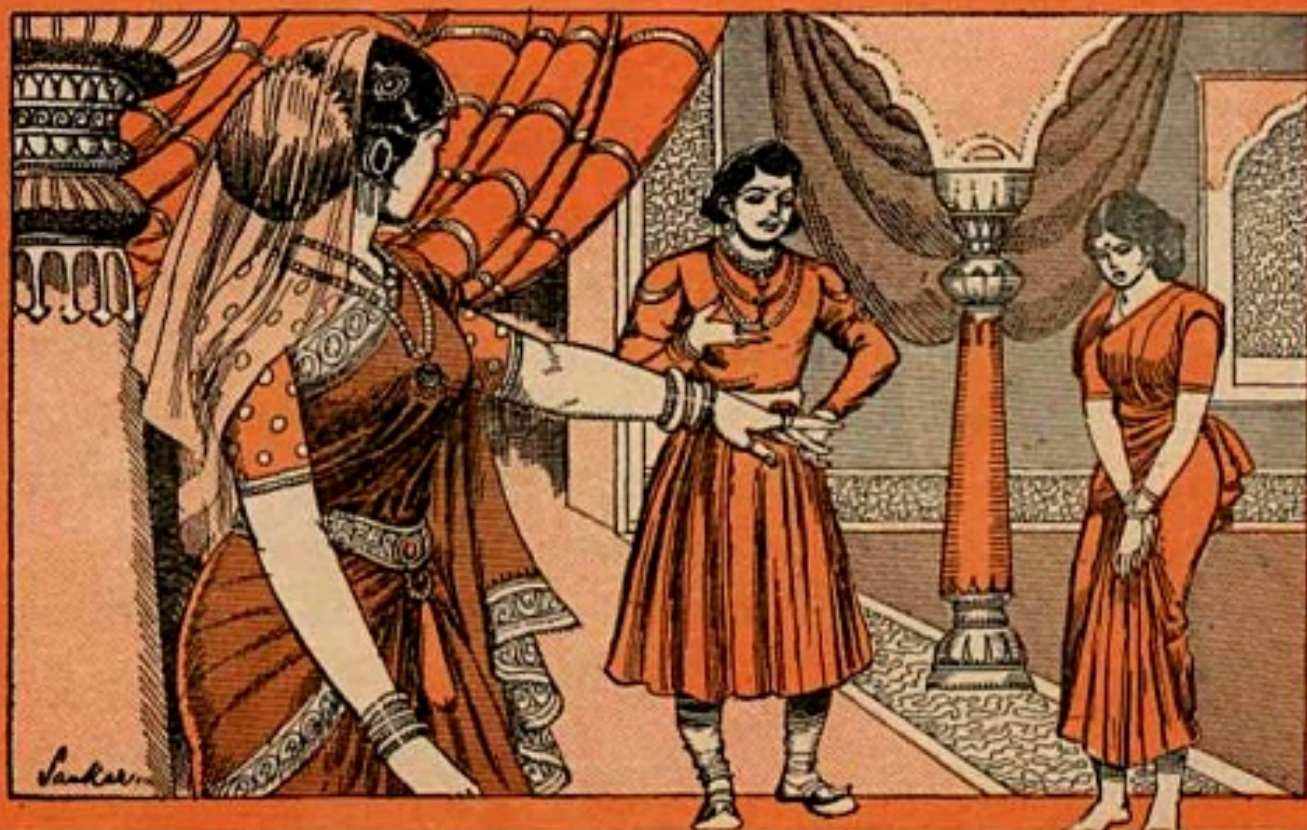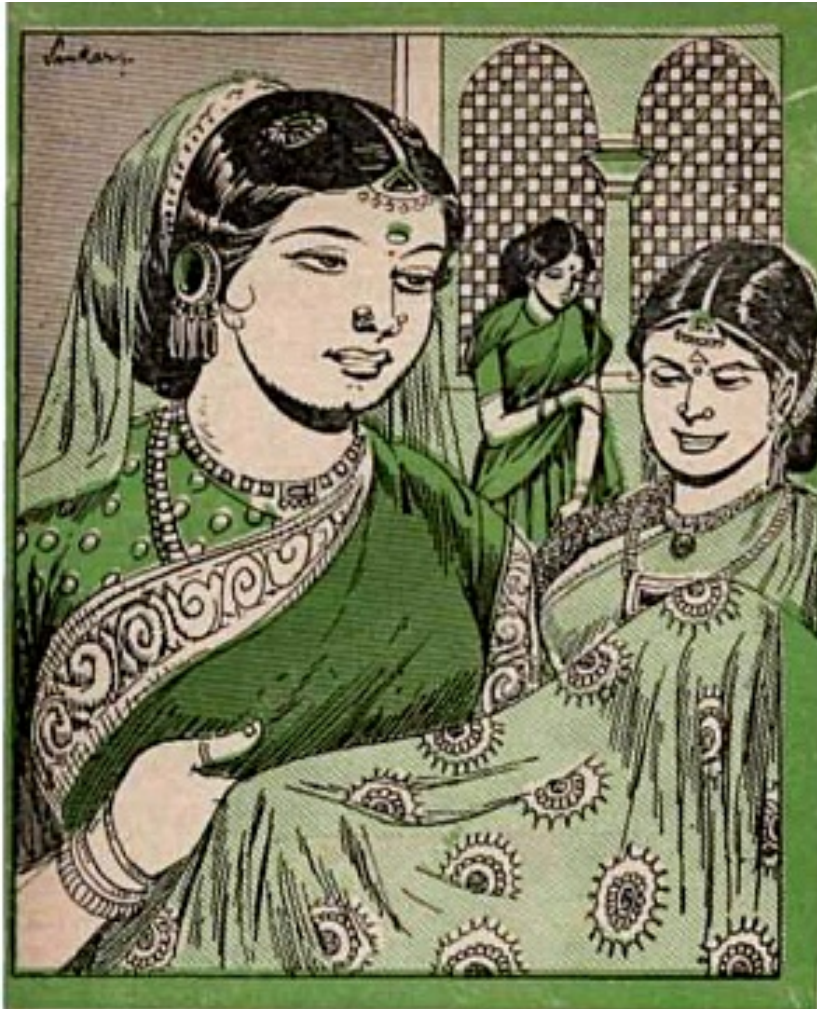
सौदामिनी यह सोच कर डर गयी कि कहीं चित्राश्व ने तो उसे पहचान न लिया! लेकिन उसने यह निश्चय किया कि चित्राश्व ने उसे नहीं पहचाना है। यह भी सोचा कि अगर उसने पहचान लिया होता तो जरूर उसका अपमान कर बैठता। उसे भलीभांति यह बात समझ में आयी कि उसने चित्राश्व का अपमान करके बड़ी भारी गलती की है। यह भी उसे भाग्य की लीला प्रतीत हुई कि उसे इस राजमहल में चित्राश्व की रानी बनकर क़दम रखना था, किंतु वह दासी बनकर रह रही है।

रात को घर लौटने पर बूढ़े ने सौदामिनी को बताया कि उसे काम मिल गया है और खाना भी दे रहे हैं। तब उसने सोचा कि बूढ़े के वास्ते खाने की चोरी करके पकड़ी गयी। यह सब बेकार हो गया।

कुछ दिन और बीत गये। राजमहल में सब कोई कहा करते थे कि राजकुमार के विवाह का निर्णय हो गया है। सौदामिनी को यह आदेश दिया गया कि दुलहिन की पोशाकें तैयार हो रही हैं। उन पर कशीदा काढ़ने का काम करे। वह दासी का काम छोड़कर अंत:पुर के एक कमरे में बैठकर सुंदर रेशमी साड़ियों पर कशीदा काढ़ने का काम करने लगी। जब तब राजमाता और राजपरिवार के लोग आकर सौदामिनी का काम देख उसकी प्रशंसा करके चले जाते थे।।

विवाह के पहले दिन राजमाता सौदामिनी के पास आयी और बोली– "मैं यह देखना चाहती हूँ कि तुमने जिन पोशाकों पर कशीदे काढ़े, उनको दुलहिन के धारण करने से कैसे होगी? दुलहिन ठीक तुम जैसी ही होगी। इसलिए तुम इनको पहनकर हमें दिखा दो तो सही।"

सौदामिनी संकोच के मारे कोई जवाब न दे पायी।

इतने में कोई चिल्ला उठा—"दुलहिन को पहनाने वाली पोशाकें दासी से कैसे पहनवा लेंगी! उसे स्नान कराकर तब पहनवा लीजिये।"

कुछ दासियों ने सौदामिनी को ले जाकर राजकुमारियों की तरह उसका स्नान कराया। अगर-धूप के साथ उसके केश सुखाये, उसके बाल सँवारकर वेणी गूँथी, तब उस में फूल सजाये। एक नारी ने आकर सौदामिनी की माँग में तिलक लगाया। दूसरी ने कपड़े पहनाये, तीसरी ने उसके हाथ-पैर व कंठ में गहने पहनाये।

सब लोग खड़े हो सौदामिनी का सौंदर्य मुँह बाये देखते ही रह गये। तब वर के वेष में चित्राश्व ने आकर कहा—"अरे, इसको दुलहिन बनाया है। सौदामिनी, क्या इन लोगों ने तुम्हारी अनुमति भी ली है?"

सौदामिनी झट उसके पैरों पर गिर कर बोली—"मैंने सोचा कि आपने मुझे नहीं पहचाना? मेरी धूर्तता को क्षमा कीजिये।"

"अरे क्षमा करके ही तो मैं तुम्हारे साथ विवाह कर रहा हूँ। यह नाटक मैं ने और तुम्हारे पिता ने दोनों ने मिलकर रचा है। तुम्हारे साथ रहनेवाला बूढ़ा मेरा विश्वासपात्र अनुचर है। तुमने मेरा जो अपमान किया, उसे मैं भूल गया। मैंने तुमको जो कष्ट दिये, उनको भी तुम भूल जाओ।" चित्राश्व ने सौदामिनी से कहा।

सौदामिनी में तब तक बहुत बड़ा परिवर्तन हो चुका था। उसका घमण्ड तोड़ने के लिए उसे और भी ज्यादा कष्ट देते, तो भी वह भोगने के लिए तैयार हो गयी थी। इसलिए उन दोनों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न रहा। दोनों का विवाह वैभव के साथ हुआ और सुखपूर्वक वे अपने दिन बिताने लगे।

मूर्ख पंडित

एक गाँव में एक डींगमार पंडित था। वह अपने पांडित्य के बारे में गाँव भर के लोगों के पास डींग मारा करता था।

एक दिन एक होशियार आदमी ने पंडित से कहा—"महाशय, इस गाँव में ऐसा कोई आदमी नहीं, जो तुम्हारे पांडित्य के बारे में न जानते हो? लेकिन इस गाँव में तुम्हारे पांडित्य की कोई क़दर नहीं होती। तुम सभी गाँवों में जाओ और वहाँ के पांडितों को हराओ। सारे देश में तुम्हारे पांडित्य की प्रशंसा होगी और हमारे गाँव का नाम भी होगा।"

यह सलाह पंडित को पसंद आयी। वह अच्छा दिन देख एक शुभ मुहूर्त में गाँव से निकल पड़ा। जब वह दूसरे गाँव में पहुँचने ही जा रहा था कि उसे गाँव के बाहर एक गड़रिया दिखाई पड़ा। पंडित ने गड़रिये से पूछा—"सुनो भाई, तुम्हारे गाँव में कोई पंडित भी है? हो तो मैं हराना चाहता हूँ। जानते हो, मैं बहुत बड़ा पंडित हूँ।"

गड़रिये को लगा कि यह पंडित कोई बकवास करनेवाला है। उसने झट झुक कर मुट्ठी भर बालू लिया और पूछा—"बताओ, मेरे हाथ में कितना बालू है?"

पंडित ने गुस्से में आकर कहा—"यह तुम कैसे वाहियात सवाल पूछते हो? तुम्हारे हाथ में जो बालू है, क्या मैंने उसे तौलकर थोड़े ही देखा या माप लिया?"

"पंडितजी, मुट्ठी में मुट्ठी-भर बालू है, यह न बता सकनेवाले तुम भी कैसे पंडित हो?" गडरिये ने पंडित की हँसी उड़ायी।

अपमानित हो पंडित घर लौट गया। तब से उसने गप्पे मारना छोड़ दिया।

सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ

कहा जाता है कि घूमनेवाले पैर कहीं एक जगह टिके नहीं रहते! सिंदबाद वैभवमय जीवन बिताते दिन आराम से काटने लगा। फिर भी वह सुखमय जीवन से ऊब उठा और देशाटन करने की उसकी इच्छा प्रबल हो उठी। इसके साथ व्यापार करने की उसकी लालसा बढ़ गयी। उसने व्यापार के लिए क़ीमती चीज़ें खरीदीं। उनके साथ रवाना हो बस्रा नगर पहुँचा। वहाँ पर व्यापारी जहाज पर रवाना हुआ। उस जहाज़ में उसके साथी व्यापारी कई थे। वे सब उसके मददगार और हितैषी थे।

कुछ दिन तक उनकी यात्रा बड़े आराम से बीती। जहाँ जहाँ जहाज ने लंगर डाला, वहाँ वहाँ उसका खूब व्यापार हुआ। सिंदबाद ने अनेक नये प्रदेश और विचित्र चीज़ें भी देखीं। तब उसने सोचा कि अगर वह यात्रा पर न आता तो उसे पछताना पड़ता। अन्य व्यापारी सब बड़े ही प्रसन्न थे।

जहाज़ इस्लाम देशों को पार कर मध्यधरा सागर में पहुँचा। तब अचानक जहाज़ के मल्लाह ने सर पीटते, कपड़े फाड़ते हुए अपनी पगड़ी उतारकर दूर फेंक दी। ऐसा लगता था मानों वह पागल हो गया है।

मल्लाह की घबराहट को देख व्यापारियों ने उससे पूछा–"क्या हुआ? बता तो दो!"

"साहब, क्या बताऊँ? हवा ने हमें धोखा दिया। हम लोग बदक़िस्मती से ऐसी जगह पहुँच गये, जहाँ पहुँचना खतरे से खाली नहीं है। दूर पर दिखाई देनेवाले उस टापू को देखिये। हम लोग उसमें पहुँचने जा रहे हैं। उसमें जाकर

तीसरी यात्रा

आज तक कोई भी आदमी प्राणों के साथ वापस नहीं लौटा है। उसे बन्दरों का टापू कहते हैं। हमारी मौत निकट आ गयी है, वरना हम लोग यहाँ पहुँचते ही क्यों?" मल्लाह ने कहा।

मल्लाह अपनी बातें पूरी भी न कर पाया था कि इतने में उस टापू में से विचित्र जानवर तैरते हुए आये। सब ने जहाज़ को घेर लिया। कुछ जानवर किनारे पर ही खड़े हो घूरकर देख रहे थे। कुछ चिल्ला रहे थे। उस चिल्लाहट को सुनते ही व्यापारियों का कलेजा काँप उठा। बंदरों ने जहाज़ में पहुँचकर माल को तितर-बितर करना शुरू किया। उनकी संख्या इतनी ज़्यादा थी कि व्यापारी डर के मारे जड़वत् उनकी करतूत देखते खड़े ही रह गये। उन लोगों से कुछ करते नहीं बना।

बंदर देखने में भयंकर थे। उनके शरीरों पर घने बाल थे। उनके चेहरे काले थे और उनकी आँखें हरी थीं। उनकी ऊँचाई ढाई फुट की थी, मगर उनकी आकृतियाँ और चिल्लाहटें डरावनी थीं। वे बंदर अपनी भाषा में गालियाँ दे रहे थे। दाँत मींच रहे थे। मगर उनकी बोली यात्रियों की समझ में बिल्कुल न आयी।

कुछ बंदरों ने मस्तूलों पर चढ़कर रस्सों को काट दिया और पालों को नीचे गिरा दिया। कुछ बंदरों ने पतवार घुमाया। हवा के रुख से जहाज़ किनारे पर जा लगा। इसके बाद बंदरों ने एक एक करके सभी यात्रियों को किनारे पर उतार दिया। तब सभी बंदर जहाज़ पर सवार हो उसे चलाते आगे ले गये।

यात्री सब किनारे रह गये। थोड़ी देर तक इधर उधर सबने अपनी दृष्टि दौड़ायी, मगर कहीं उन्हें जहाज़ का पता न लगा।

तब सब लोग टापू के भीतर चले गये। पेड़ों से फल तोड़कर झरनों का पानी पिया। उन्हें दूर पर एक ऊँचा महल दिखाई पड़ा। वे सब उस महल की ओर आगे बढ़े।

महल चौकोर तथा ऊँचा था। उसके चारों तरफ़ चहार दीवारी थी। चहार दीवारी का दर्वाजा खुला पड़ा था। दर्वाजे पर कोई पहरेदार न था। इसलिए सबने भीतर प्रवेश किया।

महल के भीतर एक विशाल बरामदा था। उसमें रसोई के बड़े-बड़े बर्तन और माँस के टुकड़ों को चुभोकर जलाने वाले लोहे के कांटे थे। फ़र्श पर हड्डियों का ढेर-सा लगा था। कुछ हड्डियाँ सूख गयी थीं और कुछ कच्ची थीं। बदबू से नाक फटी जा रही थी। सब यात्री थके मांदे थे। इसलिए लेटकर सो गये।

अंधेरा फैलने लगा। बादलों जैसे गरजने की गड़गड़ाहट सुनकर यात्री चौंक कर जाग पड़े। उनके देखते देखते छत से एक भयंकर व्यक्ति उतर आया। वह देखने में काला तथा ताड़ के पेड़ के समान था। उसकी आँखें आग की तरह लाल थीं। उसके कान कंधों पर लटक रहे थे। उसके नाखून शेर के नाखूनों जैसे पैने थे।

उसे देखते ही यात्रियों के चेहरे डर के मारे सफ़ेद पड़ गये।

वह एक राक्षस था। सीधे आकर दीवार से सटी मेज़ पर वह बैठ गया। उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी। थोड़ी देर बाद राक्षस मेज पर से उतर आया। सिंदबाद की गर्दन पकड़कर बिल्ली जैसे उसे ऊपर उठाया। उलट-पलट कर देखा। शायद राक्षस को सिंदबाद पसंद न आया। वह दुबला-पतला था। यात्रा की थकावट से वह और भी कमज़ोर हो गया था। इसलिए उसने सिंदबाद को नीचे फेंक दिया। इसके बाद एक एक करके और लोगों की जाँच करने लगा।

अंत में मल्लाह की बारी आयी। वह लंबा और हट्टा-खट्टा था। इसलिए राक्षस ने उसे तोड़कर मार डाला। लोहे के कांटे में चुभो कर जलाया। मांस खाने के बाद उसी मेज़ पर लेट गया। कुछ ही मिनटों में वह खुर्राटे लेते सो गया।

यह सब अपनी आँखों से देखनेवाले बाक़ी यात्रियों के प्राण मानों ऊपर ही उड़ से गये। सवेरे उठकर राक्षस के बाहर जाने तक सारे यात्री सिकुड़ कर कोने में पड़े रहें। इसके बाद अपनी बुरी हालत पर वे लोग जी भर कर रोने लगे।

उनकी समझ में न आया कि क्या किया जाय। बाहर पहुँच कर उन लोगों ने छिपने के लिए अनुकूल जगह की खोज की। लेकिन ऐसी कोई अच्छी जगह उन्हें दिखायी न दी। कुछ लोगों ने सोचा कि राक्षस का आहार बनने की अपेक्षा समुद्र में जान दे देना बेहतर है। कुछ लोगों ने सुझाया कि मरना निश्चित है, इसलिए राक्षस को मार डालने का प्रयत्न करें।

यह सुझाव सब यात्रियों को पसंद आया। राक्षस को मारने पर उस टापू से

भागने के लिए कोई न कोई साधन चाहिये। इसलिए सबने मिलकर समुद्र के किनारे लक्कड़ों से एक डोंगी बनायी। अंधेरा फैलने के पहले उस महल में लौट आये।

नियत समय पर राक्षस महल में आ पहुँचा। उसने एक दूसरे आदमी को मारकर खा लिया। तब मेज़ पर लेट कर सो गया। उस वक़्त यात्रियों ने लोहे के कांटों को आग में तपाया। एक एक कांटे को तीन-चार आदमियों ने मिलकर उठाया और हिम्मत करके राक्षस की आँखों में गरम कांटे चुभो दिये। उस पीड़ा से राक्षस इस तरह चिल्ला पड़ा कि सारा महल गूँज उठा।

राक्षस अंधा तो हो गया, मगर वह मरा नहीं। उसने यात्रियों को पकड़कर मारने के लिए टटोल कर देखा। मगर कोई भी उसकी पकड़ में न आया। आखिर टटोलते हुये वह महल के बाहर चला गया।

मौक़ा पाकर सभी यात्री समुद्र के किनारे जा पहुँचे। डोंगी पर सवार हो उसे समुद्र में ढकेलते हुये ले गये।

थोड़ी देर बाद उन लोगों ने राक्षस का गर्जन सुना। वे देखते क्या हैं, राक्षस की

औरत उसका हाथ पकड़े अंधे राक्षस को लिये उनकी ओर चली आ रही है। दोनों ने समुद्र के किनारे पहुँच कर बड़ी-बड़ी चट्टानों को डोंगी पर फेंकना शुरू किया। कुछ पत्थर उन लोगों से जा लगे। सिंदबाद, दो और यात्रियों को छोड़ बाक़ी सब समुद्र में गिर गये। वे तीनों पत्थरों के वार से डोंगी को बचाते समुद्र में आगे बढ़े।

वे तीनों यात्री दो दिन डोंगी पर यात्रा करते आखिर एक दूसरे टापू में जा पहुँचे। वे एक दम थक कर शिथिल हो गये थे। उस टापू में पहुँच कर पेड़ों के फल तोड़कर
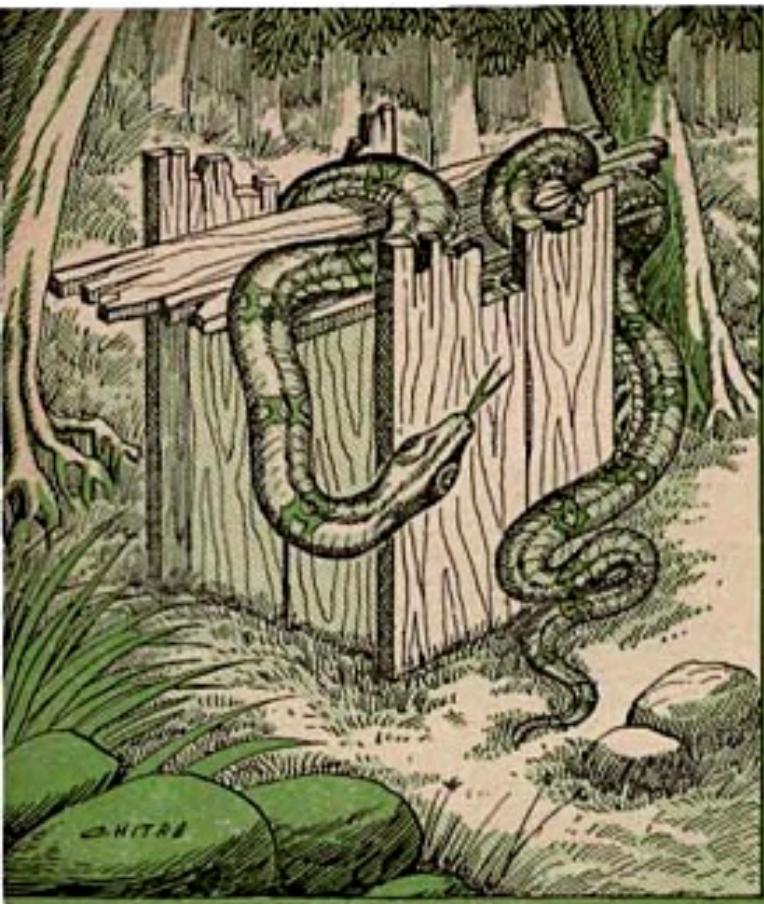
खाये। झरने का निर्मल जल पिया। तब तक सूरज डूब चुका था। तीनों एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर उस रात को वहीं सो गये।

सवेरे उठकर देखते क्या हैं? एक बहुत बड़ा अजगर उस पेड़ की ओर आ रहा है। उसे देखते वे लोग भय के मारे काँप उठे। अजगर ने अपना सर उठाकर सिंदबाद के साथियों में से एक को निगल डाला और अपने रास्ते चला गया।

इसके बाद सिंदबाद और उसका एक साथी पेड़ से उतर आये। फल खाने के बाद सारे टापू में ऐसे पेड़ की खोज करने लगे जो बहुत ही ऊँचा हो। आखिर उन्हें ऐसा एक पेड़ दिखाई दिया। उस रात को वे दोनों उसी पेड़ पर सो गये। सवेरे उठते ही उन दोनों ने देखा कि वही अजगर उस पेड़ के तने से लिपटा हुआ पड़ा है। सूरज की किरणों के फूटते ही अजगर ने अपना सर उठाया और सिंदबाद के एक और साथी को निगलकर चला गया।

सिंदबाद की घबराहट का वर्णन करना मुश्किल था। अब वह अकेला रह गया था। बड़ी मुश्किल से वे लोग राक्षस के चंगुल से छूट गये थे। मगर अजगर उनके सामने मौत बनकर प्रत्यक्ष हुआ। सिंदबाद ने सोचा कि अजगर के पेट में जाने के बदले समुद्र में कूद कर आत्महत्या कर लेना कहीं अच्छा है। यह सोचकर वह समुद्र के किनारे की ओर दौड़ गया।

किनारे पहुँचने पर उसे अपनी जान बचाने का एक उपाय सूझा। समुद्र के किनारे कई तख़्ते पड़े हुये थे। उसने तख़्तों को इकट्ठाकर चारों ओर चार तख़्ते गाड़ दिये। उनके बीच लेटकर उस पर कई तख़्ते डाल दिये। ठीक वक़्त पर अजगर आया। अजगर ने तख़्तों के बीच से सिंदबाद को बाहर खींचने का प्रयत्न

किया। पर वह सफल न हो सका। इसलिए लाचार होकर वह वहाँ से चला गया।

अजगर के चले जाने की आहट पाकर सिंदबाद तख्तों को हटाकर बाहर आया। समुद्र के किनारे खड़े ही उसने देखा। दूर पर एक जहाज़ को जाते हुए उसने देखा। वह पागल की तरह ज़ोर-शोर से चिल्लाने लगा। हाथ हिलाया। एक पेड़ से अपनी पगड़ी को बांध उसे हवा में हिला दिया। इस तरह वह मल्लाहों की दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट कर सका। मल्लाह अपने रास्ते से हट कर नाव को किनारे की ओर ले आये। लंगर डालकर सिंदबाद को जहाज़ पर चढ़ा लिया।

सिंदबाद ने मल्लाहों से कपड़े लेकर पहन लिया। खाना खाकर थकावट को दूर करने के ख्याल से सो गया। मृत्यु के मुँह से बचकर निकलने की वजह से क्रमशः उसमें स्फूर्ति आने लगी। सारी तक़लीफ़ें अब उसे सपने जैसी मालूम होने लगीं।

यात्रा चलती रही। कुछ दिन बाद जहाज़ ने सलाहिता नामक टापू में लंगर डाला। व्यापारी सब खरीद-फ़रोख्त करने शहर के अन्दर चले गये। सिंदबाद अकेला जहाज़ पर रह गया। मल्लाह ने उसके पास पहुँच कर कहा—"देखो भाई, तुम गरीब मालूम होते हो। असहाय हो। यह भी तुमने बताया कि काफ़ी तक़लीफ़ें झेल चुके हो। मेरे पास एक व्यापारी का थोड़ा माल रह गया है। हमारी यात्राओं में एक व्यापारी एक टापू में ही रह गया। इस माल को ले जाकर तुम बेच कर धन ले आओ। उसका जो लाभ मिलेगा, उसे तुम रख लो, असली दाम जो होगा, उसे मुझे दे दो। मैं उस धन को उस व्यापारी के रिश्तेदारों को सौंप दूँगा।"

सिंदबाद ने मल्लाह की बात मान ली।

मल्लाह ने मुनीम को बुला कर कहा– "यात्री सिंदबाद के माल का ब्यौरा लिख कर इस आदमी को सौंप दो। इसका नाम भी उस ब्यौरे में लिख लेना।"

सिंदबाद उद्रेक में आकर चिल्ला पड़ा– "मैं ही वह व्यापारी सिंदबाद हूँ।"

उसने मल्लाह की ओर निगाह डाली। उसने उसे पहचान लिया। अपनी दूसरी यात्रा में उसीने सिंदबाद को एक टापू में छोड़कर यात्रा की थी।

सिंदबाद ने मल्लाह से अपनी दूसरी यात्रा का अनुभव सुनाते भेरुंड पक्षी और हीरों की घाटी की कहानी बतायी। उन अद्‌भुत कहानियों को सुनते मल्लाह भौंचक्का रह गया। तब अपने माल को बेच कर जहाज़ में लौटे हुए एक व्यापारी ने सिंदबाद की ओर ध्यान से देखा और कहा–"या ख़ुदा! मेरी बातों पर किसीने यक़ीन नहीं किया। मैंने जब उन लोगों से बताया कि भेरुंड पक्षी रत्नों की घाटी से एक आदमी को उठा लेते अपनी आँखों से देखा है, किसी ने विश्वास नहीं किया। मेरी बातों को झूठ बताया। यही वह आदमी है। मुझे क़ीमती रत्न देनेवाला पुण्यात्मा है।" ये बातें कहते उस व्यापारी ने सिंदबाद का आलिंगन किया।

मल्लाह का संदेह जाता रहा। उसने सिंदबाद के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर उसका अभिनंदन किया। इसके बाद सिंदबाद ने अपना माल बेचकर खूब धन कमाया।

जहाज़ सलाहिता को छोड़ सिंधु देश में पहुँचा। वहाँ पर सिंदबाद ने उछलनेवाली मछलियों को देखा। कई दिन की यात्रा के बाद जहाज बस्त्रा नगर पहुँचा। वहाँ से सिंदबाद बगदाद पहुँचा। अपने रिश्तेदारों से मिलकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। गरीबों में खूब धन बांट कर फिर से आराम की ज़िंदगी बिताने लगा।
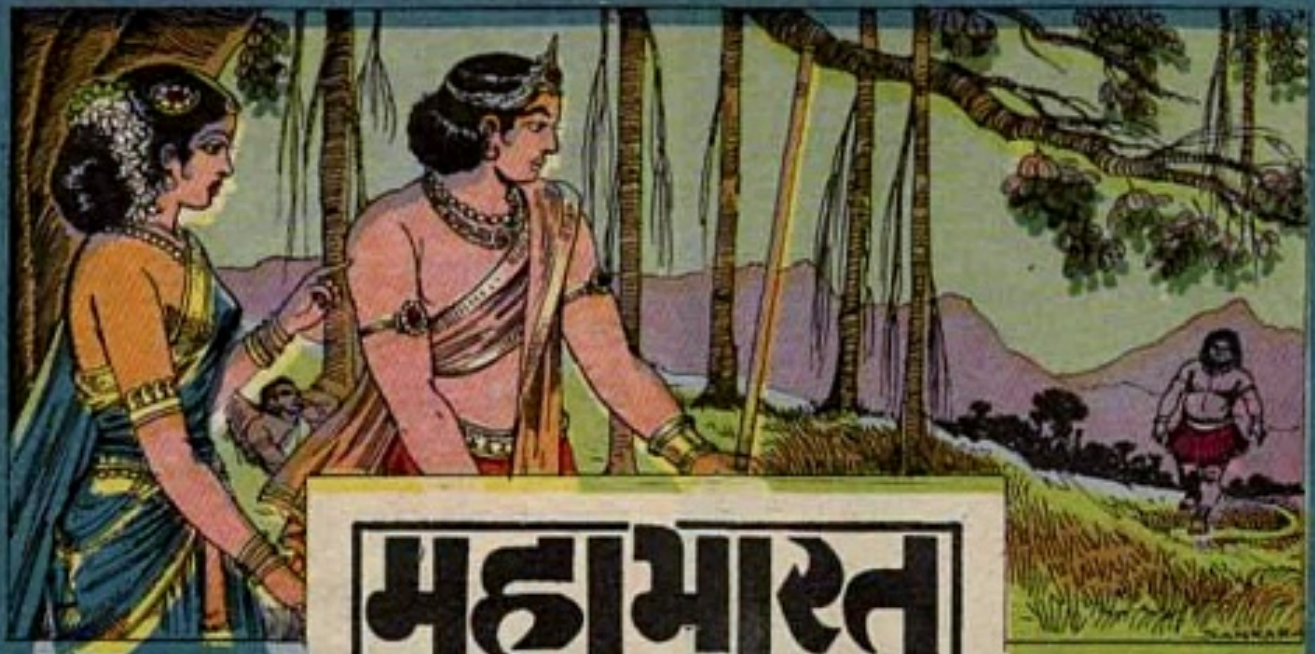
हिडिंबा ने भीम पर मोहित होकर जब कहा कि वह भीम की पत्नी बनना चाहती है, तब भीमसेन ने उसे समझाया– "तुम्हारा कहना कैसे संभव होगा? तुम्हारे साथ सुख भोगने के लिए मैं अपनी माँ और भाइयों को तुम्हारे भाई के लिए कैसे बलि दे सकता हूँ?"

"मैंने पहले ही कह दिया कि आपकी माँ और भाइयों की मैं अपने भाई से रक्षा करूँगी। आप इन सब को जगाइये।" हिडिंबा ने कहा।

"ये सब गहरी नींद सो रहे हैं। इन्हें जगाना मुझे पसंद नहीं है। अब रही तुम्हारे भाई की बात! मुझे किसी भी राक्षस का भय नहीं है। बड़े से बड़े राक्षस को भी पल-भर में मार डालने की ताक़त मुझ में है।" भीम ने जवाब दिया। इस बीच अपनी बहन को जल्द लौटते न देख हिडिंब पेड़ से उतर पड़ा और पांडवों के निकट आ पहुँचा।

अपने भाई को क्रोध की आग उगलते आते हुये देख हिडिंबा ने भीम से कहा– "मेरा भाई काल की तरह इधर ही आ रहा है। आप सबका यहाँ रहना खैरियत नहीं है। मैं आप लोगों को गगन मार्ग में उठा ले जाकर किसी सुरक्षित प्रदेश में उतार दूँगी।"

"हिडिंबे, तुम डरो मत। तुम्हारे भाई की मौत निकट आयी है। इसीलिए वह यहाँ आ रहा है। इसके सहायक सभी

११. हिडिंबासुर का वध

राक्षस भी एक हाथ मुझ पर हमला कर दे, तो भी मैं उन सब को यम के पास भेज सकता हूँ। तुम खुद अपनी आँखों से देख खुश होगी।" भीम ने समझाया।

"आप की ताक़त की बात मैं क्या जानूं? मेरे भाई ने कई बार मुनियों को बुरी तरह मार डाला था। इसीलिए मैं ने सावधान किया।" हिडिंबा ने कहा।

इतने में हिडिंब निकट आ ही गया। अपनी बहन की सुंदर वेष-भूषा देख हिडिंब क्रोध से आग बबूला हो उठा और ललकारते हुए बोला–"अरी हिडिंबा, लगता है कि तुम मुहब्बत के फेर में पड़ गयी हो। इधर मैं भूख से परेशान हूँ। राक्षस जाति की मर्यादा को धूल में मिलाकर तुम मानवों के साथ संबंध जोड़ना चाहती हो? मुझे ही तुम धोखा देने पर तुल गयी हो? देखती रहो, इन लोगों को मार डालने के बाद मैं तुम्हारी भी जान लूंगा।" ये शब्द कहते हिडिंब भीम की ओर मुड़ पड़ा।

"अरे राक्षस! तुम्हारा वध करके जंगल के लोगों का पिंड छुड़ा दूंगा।" भीम गरज उठा।

हिडिंब हाथ फैलाये भीमसेन पर कूद पड़ा। भीम ने बड़ी युक्ति से उसे पकड़ लिया और उसे घसीट ले गया। इतने में भीम की पकड़ से हिडिंब ने अपने को छुड़ा लिया। भीम को कसकर अपनी बाहुओं में बाँध लिया, तब गरज पड़ा।

भीम ने सोचा कि हिडिंब का गरजन सुनकर पांडव जाग पड़ेंगे, इसलिए वह हिडिंब की पकड़ से अपने को छुड़ा कर उसे और दूर खींच ले गया। हिडिंब ने समझ लिया कि भीमसेन साधारण मानव नहीं है, यह सोचकर उसने बड़ी भयंकरता के साथ भीम पर आक्रमण किया।

दोनों भयंकर रूप से लड़ने लगे। उनके हमलों से धरती हिल उठी। पेड़

और पौधे गिर गये। उस ध्वनि को सुनकर कुंतीदेवी तथा पांडव चौंक कर जाग उठे। कुंतीदेवी ने देखा कि उनके पास ही एक अनुपम सुंदरी के वेष में हिडिंबा घबराये हुए खड़ी है। उसने हिडिंबा से कहा–"बेटी, तुम देखने में कोई वनदेवी या अप्सरा लगती हो! तुम कौन हो? कहाँ से आयी हो? सविस्तार अपनी कहानी सुनाओ।"

हिडिंबा ने सच्ची कहानी बता दी।

"माँ! मैं और मेरे भाई हिडिंब नामक राक्षस इस जंगल में निवास करते हैं। मेरे भाई ने आप सबको खाने के ख्याल से पकड़ लाने के लिए मुझे भेज दिया। लेकिन मैं आपके पुत्र के सौंदर्य को देख मोहित हो गयी और अपने भाई की आज्ञा का पालन न कर सकी। मैंने अपने दिल की बातें आपके पुत्र को बता दी है। इतने में मेरा भाई आ गया। आपके पुत्र मेरे भाई को खींचकर दूर ले गये। वे दोनों अब भयंकर रूप से लड़ रहे हैं।"

हिडिंबा की बात सुनकर युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल और सहदेव लड़ाई के प्रदेश में पहुँचे। थोड़ी दूर पर खड़े हो उन दोनों की लड़ाई देखने लगे। वे दोनों दो सिंहों की तरह लड़ रहे थे। दावानल से
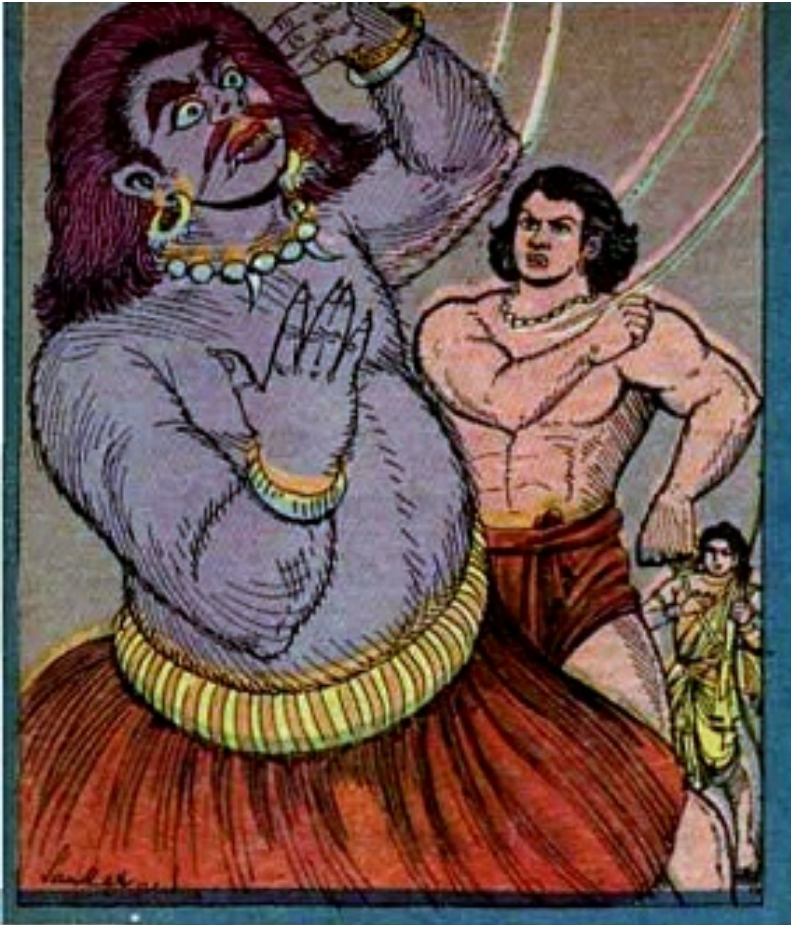
फैलनेवाले धुएँ की तरह धूल उठकर चारों ओर फैल गयी ।

अर्जुन ने देखा कि हिडिंब का हाथ भीमसेन से ऊँचा है । इसलिए वह भीम से बोला–"भैया, तुम थक गये मालूम होते हो । मुझे भी थोड़ी देर लड़ने दो ।"

"अर्जुन, घबराओ नहीं । मेरे हाथों में आकर यह बच नहीं सकता ।" भीमसेन ने जवाब दिया ।

"ऐसी बात हो तो जल्द ही इसे खतम कर डालो । हम लोगों का बड़ी देर तक यहाँ रहना उचित नहीं है । सूर्योदय भी हो रहा है । अब इसके साथ लड़ते समय न गँवा दो, ज़रूरत हो तो मैं अपने बाणों से इसका सर काट डालूँगा ।" अर्जुन ने समझाया ।

यह बात सुनते ही भीम आवेश में आ गया । हिडिंब को उठाकर चारों ओर घुमाया और जमीन पर पटक दिया । उसकी कमर तोड़कर मार डाला । हिडिंब ने कराहते हुए अपने प्राण छोड़ दिये ।

कुंतीदेवी, युधिष्ठिर आदि ने भीमसेन का अभिनंदन किया । अर्जुन ने तो भीम की बड़ी तारीफ़ की । इसके बाद बोला–"दूर पर कोई गाँव दिखाई दे रहा है । हमें जल्द वहाँ पर जाना चाहिए । हमें दुर्योधन के गुप्तचरों से बचकर निकल जाना होगा ।"

कुंतीदेवी को साथ लिये पांडव वहाँ से चल पड़े । हिडिंबा भी उनके साथ साथ चलने लगी । इस पर भीम ने कहा–"हिडिंबे, तुम इस मोहिनी के रूप में हमसे तुम्हारे भाई के वध का बदला लेना चाहती हो? भाग जाओ, वरना तुम्हारा भी वध कर डालूँगा ।"

इस पर युधिष्ठिर ने भीम को समझाया–"भीमसेन, एक औरत को मार डालने की धमकी देते हो? अगर इसको

पुत्र को अपने साथ ले जाकर थोड़े दिन सुख भोगूंगी तब फिर आपको सौंप दूंगी। आप लोगों को कोई तक़लीफ़ हो तो बता दीजिये। मैं आप सबको बड़ी आसानी से जंगल पार करा दूंगी।"

इस पर युधिष्ठिर ने कहा–"हिडिंबे, मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करता हूँ। भीम तुमको स्वीकार करेगा। दिन भर तुम लोग स्वेच्छापूर्वक विहार करो, मगर रात के समय तुम भीम को हमारे डेरे पर भेज दो।"

युधिष्ठिर की बात भीम ने मान ली।

भीम ने हिडिंबा के पुत्र होने तक उसे अपने साथ रखने को मान लिया। हिडिंबा भीम को लेकर गगन मार्ग में चली गयी। दोनों ने पहाड़ की चोटियों और गुफ़ाओं में, नदी के किनारों, सरवरों तथा सुंदर लतागृहों में विहार किया। कुछ समय बाद हिडिंबा गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र का जन्म दिया। वह जन्म के साथ ही कामरूप बनकर, बात की बात में बड़ा हो गया। उसने अपने माता-पिता तथा अन्य लोगों को प्रणाम किया। उसके सर पर एक भी बाल न था और वह देखने में घट जैसा था। हिडिंबा उसके

हम पर क्रोध भी हो तो यह हमारा क्या बिगाड़ सकती है? हिडिंबासुर को मार डालना चाहिए था, तुमने उसे मारकर अच्छा ही किया। लेकिन उसकी बहन होने मात्र से हिडिंबा को मारना उचित नहीं है। यह भारी भूल होगी।"

हिडिंबा ने युधिष्ठिर तथा कुंतीदेवी के पैरों पर गिरकर प्रार्थना की–"मैंने भीमसेन पर मोहित होकर अपने सगे लोगों तथा राक्षस-धर्म को भूलकर इनसे प्रेम किया है, अगर ये मुझे स्वीकार न करेंगे तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। इसलिए मेरे प्राण बचाने की कृपा करें। आपके

रूप को देख अचरज में आ गयी। इसीलिए उसका नाम घटोत्कच (केश रहित घड़ा) पड़ा।

घटोत्कच ने माता-पिता को प्रणाम करने के बाद पूछा–"आप लोगों को मुझसे कोई काम आ पड़े तो मेरा स्मरण कीजिये; मैं तुरंत आप के सामने हाज़िर हो जाऊंगा।" यह कहकर वह उत्तरी दिशा की ओर चला गया। हिडिंबा भी अपने नियम के अनुसार भीमसेन से अनुमति लेकर अपने रास्ते आप चली गयी।

इसके बाद पांडव जटाएँ धारण कर, वल्कल पहने, ब्राह्मणों के वेष में मत्स्यदेश, त्रिगर्त देश, पाँचाल तथा कीचक देशों से होते हुये बहुत दूर चले गये। कुंतीदेवी जब चल न पाती थीं तब पांडवों में से कोई न कोई उनको उठाये चलते थे। आहार के वास्ते उन लोगों ने जानवरों का शिकार भी किया।

इस प्रकार उनके देशाटन करते समय उन्हें एक जगह व्यासमुनि दिखाई पड़े। सबने उनको नमस्कार किया। तब पांडव दुखी वदनों से हाथ बाँधे खड़े हो गये।

मुनि व्यास ने पांडवों से कहा–"बेटे, मेरी दृष्टि में तुम लोग और धृतराष्ट्र के पुत्र अलग नहीं, सब बराबर ही हैं। मगर उन लोगों ने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया है। इतनी छोटी उम्र में तुम लोगों को तकलीफ़ें झेलते हुये देख मुझे बड़ा दुख होता है। तुम लोग चिंता न करो। भविष्य में तुम्हारा भला होगा। यहाँ से थोड़ी दूर पर ही एकचक्रपुर है। वह सुंदर और स्वास्थ्यकर गाँव है। तुम लोग सब की आँख बचाकर वहाँ कुछ दिन बिताओ।"

व्यास मुनि खुद उन्हें एकचक्रपुर में ले गये। एक ब्राह्मण के घर में उनके ठहरने का प्रबंध करके कुंतीदेवी से कहा–

"देवीजी, आप लोग यहाँ एक महीने तक ठहर जाइये। मैं पुन: आकर आप लोगों से मिलूँगा।" यह कहकर व्यास मुनि वहाँ से चले गये।

कुंतीदेवी तथा पांडव उस ब्राह्मण के घर में रहते भिक्षाटन करते अपने दिन बिताने लगे। पाँचों पांडव जो भोजन लाते, कुंतीदेवी उसके दो हिस्से करके एक हिस्सा भीमसेन को खिलाती, दूसरे हिस्से में बाक़ी चारों को खिला कर वे भी खा लेतीं। उसी में से थोड़ा-बहुत बचाकर अतिथियों को भी खिलातीं।

पांडव भिक्षाटन के साथ वेदों का अध्ययन भी करते थे। तालाबों में तैरकर पेड़ों की छाया में आराम करते थे। उनके दिन इस तरह आराम से बीतने लगे।

एक दिन युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल और सहदेव गाँव में भिक्षाटन करने चले गये। घर में कुंतीदेवी और भीमसेन थे। उस वक़्त उस ब्राह्मण के घर के हिस्से से रोने की आवाज़ सुनाई दी।

कुंतीदेवी ने रोना सुनकर भीम से कहा— "बेटा, घरवाले शायद किसी विपत्ति में पड़े हुए हैं। उन लोगों ने हमें आश्रय देकर हमारा बड़ा उपकार किया है। हम लोग बहुत दिनों से इनके घर रहते आये हैं। इसलिए उनकी विपत्ति का कारण जानकर भरसक हम उनकी मदद करेंगे। मैं अभी पता लगाकर आती हूँ।" यह कहकर कुंतीदेवी उस ब्राह्मण के हिस्से में चली गयीं।

उस मकान का मालिक ब्राह्मण अपनी पत्नी, पुत्री और पुत्र को सामने बिठाये दहाड़े मार कर रो रहा था। उनको रोते देख कुंतीदेवी यह पूछ न पायीं कि आप लोग रोते क्यों हैं? वे भी उनके पास जाकर बैठ गयीं।

[११]

१९१३ सितंबर में दक्षिण आफ्रिका में गांधीजी ने सत्याग्रह का जो आन्दोलन चलाया, वह प्रसिद्ध राजनैतिक नेताओं की दृष्टि में हँसी मजाक़ का आन्दोलन था। सत्याग्रहियों की सख्या १६ से अधिक, ६६ से ज्यादा न थी। गांधीजी ने सर्वप्रथम सत्याग्रहियों को अनुमति-पत्रों के विना नेटाल से ट्रान्सवाल भेजा। सरकारी अधिकारियों ने उनको गिरफ़्तार करके जेल में रखा। इस के बाद ११ नारियाँ ट्रान्सवाल की सीमा पार कर के नेटाल राज्य में पहुँचीं और वहाँ से कोयले की खानों के लिए मशहूर न्यूकेसिल की ओर रवाना हुईं। उन लोगों ने खानों में काम करनेवाले मजदूरों द्वारा हड़ताल भी करवायी। यह सोचकर गांधीजी न्यूकेसिल गये कि कहीं हड़ताल करनेवाले हिंसाकांड न कर बैठे। मजदूर इस बात से डरते भी न थे कि खानों के मालिक उन पर कड़ी कार्रवाई करेंगे। उन सबने एक कंठ से कहा कि हमें "गांधी भाई" पर पूरा विश्वास है।

लेकिन हुआ क्या, खानों के मालिकों ने मजदूरों के घरों में बिजली और पानी की व्यवस्था को टप्प कर दिया। इस पर गांधीजी उन सबको ट्रान्सवाल ले जाने की तैयारी करने लगे। उस दल में २०३७ पुरुष, १२७ नारियाँ और ५७ बच्चे थे। उन सव के जोहान्सबर्ग पहुँचने के पहले ही गांधीजी को तीन बार गिरफ़्तार करके अंत में क़ैद किया। इसके बाद हड़तालियों को भी गिरफ़्तार करके नेटाल ले गये और वहाँ पर उन्हें भी क़ैद किया।

दक्षिण आफ्रिका की सरकार ने अत्यंत कठोरता के साथ भारतीयों को दबाने की
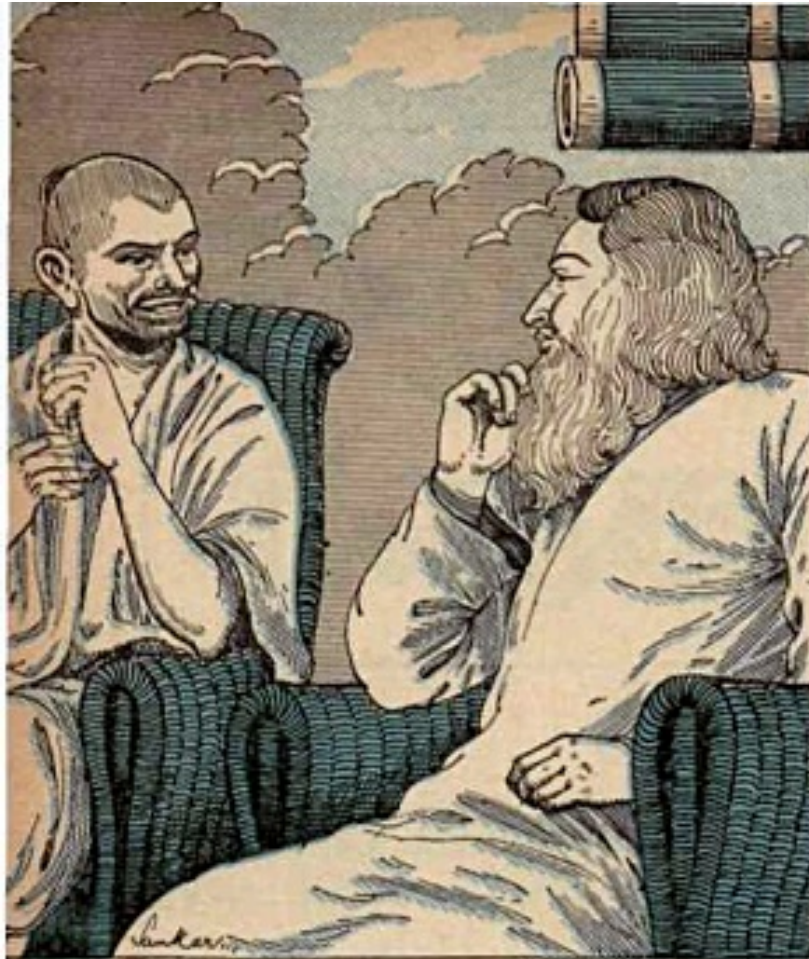
कोशिश की। इस पर हिन्दुस्तान में आन्दोलन चला। हिन्दुस्तान के वाइसराय ने भी आपत्ति उठायी। आखिर दक्षिण आफ्रिका की सरकार को झुकना पड़ा। हिन्दुस्तान के प्रति उसकी जो विरोधी नीति थी, उस में परिवर्तन भी करना पड़ा। भारतीयों पर जो तीन पाउंड का कर लगा था, उसे उठाया गया। भारतीयों के विवाहों को सरकारी मान्यता मिली। तब सत्याग्रह का आन्दोलन बंद हुआ। जेल में रहते गांधीजी ने जो जूतों का जोड़ा तैयार किया था, उसे जनरल स्मट्स को उन्होंने भेंट किया। १९१४ में गांधी जी हिन्दुस्तान लौट आये। तब वहाँ के भारतीयों का नेतृत्व करनेवाला नेता कोई न रहा।

९ जनवरी १९१५ को गांधीजी बंबई बंदरगाह में जब जहाज से उतरे, तब उनका एक महान योद्धा के रूप में स्वागत किया गया। तीन दिन बाद एक विराट सम्मान-सभा भी आयोजित हुई। सरकार ने उनको 'केसरी हिन्द' नामक पदक पुरस्कृत कर उनका आदर किया।

हिन्दुस्तान लौटते ही गांधीजी राजनीतिक क्षेत्र में नहीं उतरे। वे पोरबंदर और राजकोट चले गये। वहाँ से रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांति निकेतन में गये। वहाँ पर गांधीजी एक सप्ताह रहें। इतने में उन्हें गोखलेजी की मृत्यु का समाचार तार द्वारा मिला। गोखलेजी ने गांधीजी को एक साल तक राजनैतिक क्षेत्र से दूर रहने की सलाह दी थी।

दक्षिण आफ्रिका से अपने साथ लौटे हुये रिश्तेदार व मित्रों के लिए गांधीजी ने साबरमती में एक आश्रम की स्थापना की। यह अहमदाबाद के समीप में स्थित १५० एकड़ों का क्षेत्र है। प्रारंभ में ही आश्रम में संघर्ष चला। गांधीजी ने हरिजनों को

आश्रम में स्थान दिया था। यह उनके विरोध का कारण बना। इस आश्रम ने गांधीजी के सिद्धांतों की प्रयोगशाला तथा सत्याग्रहियों के शिक्षण के शिविर के रूप में काम दिया।

१९१९ में रौलट क़ानून के अमल होने तक गांधीजी ने राष्ट्रीय राजनैतिक क्षेत्र में प्रमुख पात्र नहीं लिया। तब तक वे चंपारन और गुजरात के कृषक-मजदूरों की लड़ाई में तथा अहमदाबाद के मिल मजदूरों के झगड़ों में ही भाग ले चुके थे। कांग्रेस का राष्ट्रीय आन्दोलन इसके पूर्व बहुत दिनों से चल रहा था। उसके नेता मान्य तिलक, गोखले, लाजपत राय आदि थे। रौलट एक्ट जनता के विचारों के विरुद्ध अमल किया गया था। इस एक्ट के अनुसार सरकार किसी को इस शंका से गिरफ़्तार कर सकती है कि कोई भी क़ानून के विरुद्ध अपराध कर सकता है। इस एक्ट का जनता तथा नेताओं ने तीव्र विरोध किया। फिर भी सरकार मौन रही। इसलिए सत्याग्रह आन्दोलन चलाने का गांधीजी को अच्छा मौक़ा मिला।

तुरंत गांधीजी ने सत्याग्रह सभा की स्थापना की और सारे देश का भ्रमण

करते भाषण देने लगे। ६ अप्रैल को हड़ताल चलाने का उन्होंने निश्चय किया। लेकिन बंबई, अहमदाबाद आदि शहरों में जनता ने हिंसाकांड किये, इस पर उन्होंने सत्याग्रह रद्द किया और अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए तीन दिन का उपवास किया। उपवास इसलिए किया था कि वे तब तक यह जान न पाये थे कि जनता में अब भी हिंसा के तत्व बचे हुये हैं।

पंजाब के अमृतसर में १० अप्रैल को जनता ने क्रोध में आकर गोरे लोगों को पीटा, घर जलाये, तार काट दिये। ब्रिगेडियर डय्यर ने फौज़ को बुलाकर

शहर में शांति क़ायम की। इसी डय्यर ने दो दिन बाद वैशाख पूर्णिमा के दिन जलियनवाला बाग में इकट्ठी जानता पर गोलियाँ चलवायीं और बीभत्स कांड किया। उस वक़्त ४०० बेहथियार लोग मर गये और १२०० लोग घायल हुये।

इसके बाद भारतीयों तथा ब्रिटीशवालों के बीच जो राजनैतिक शत्रुता पैदा हुई, वही स्वतंत्रता का कारण बनी। तब तक गांधीजी का भी ब्रिटीशवालों पर विश्वास बना रहा। अब उनके सुधार में विश्वास जाता रहा।

गांधीजी के सत्याग्रह के मुख्य कार्यक्रम विदेशी अदालतों, स्कूलों, विधान सभाओं तथा वस्त्रों का बहिस्कार करना था। यही ब्रिटीश सरकार के प्रति असहयोग था। गांधीजी ने ११२० की कलकत्ता कांग्रेस में कहा था कि जनता ठीक से असहयोग आन्दोलन चलावे तो एक ही साल में भारत आज़ाद होगा। कांग्रेस के अधिक सदस्यों ने गांधीजी के आन्दोलन का समर्थन किया।

गांधीजी के प्रचार व उनके आदर्शों पर देश की जनता का विश्वास था। गांधीजी को 'महात्मा' की उपाधि प्राप्त होने का यही कारण था। इसके बाद सारे देश व दुनिया में भी 'महात्मा' का मतलब गांधीजी माना गया।

यह कहना होगा कि १९२१ में भारत में जागृति हुई है। गांधीजी के आन्दोलन के पीछे हिन्दू ही नहीं, बल्कि मुसलमान भी थे। १९२१ के अंत तथा १९२२ के प्रारंभ में ३०,००० लोग जेल गये। उस समय जेल के लिए "श्रीकृष्ण का जन्मस्थान" प्यारा नाम पड़ गया। सारे देश में जुलूसों पर प्रतिबंध लगाया गया। खिलाफ़त तथा कांग्रेस के दफ़्तरों की तलाशी ली गयी।

१८. "हज़ार टापू"
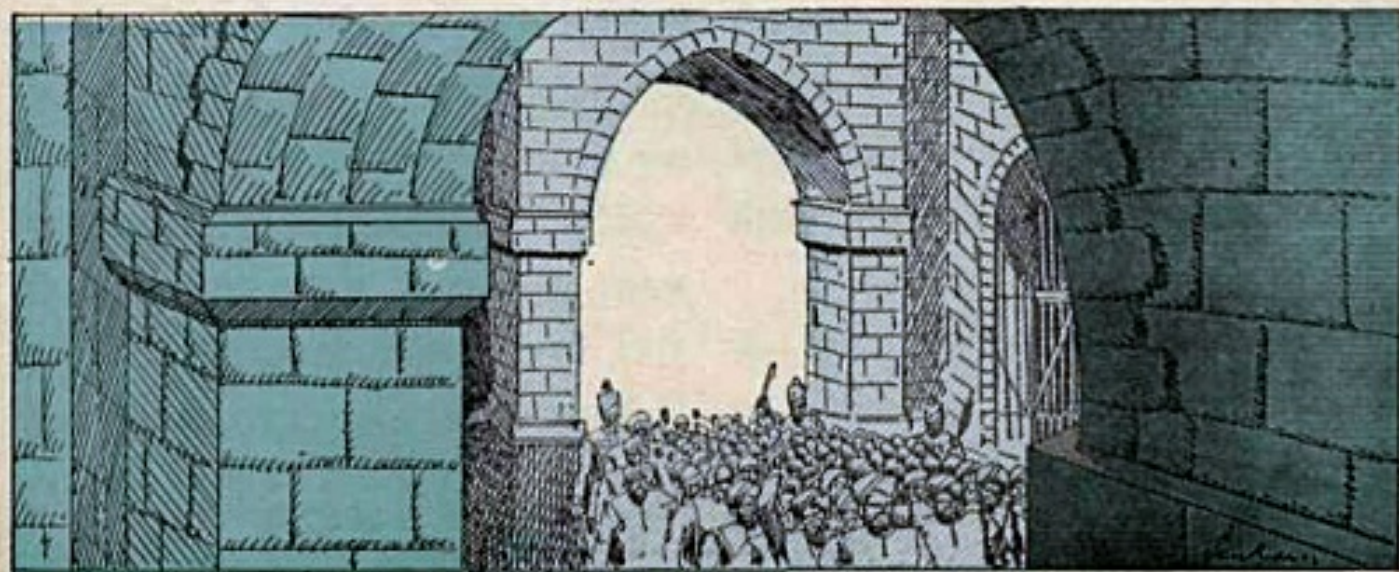
अमेरिका और कनाड़ा देश की सीमा पर स्थित अंटारियो सरोवर से जहाँ सेंट लारेन्स नदी निकलती है, वहाँ पर असंख्य टापू हैं। बहुत समय पूर्व फ्रान्स के एक अन्वेषक इन्हें देख चकित हो कह बैठा था–"हज़ार टापू!" वास्तव में इन टापुओं की संख्या लगभग १७०० तक है। फिर भी इनका नाम "हज़ार टापू" क़ायम रह गया।

यह प्रदेश एक समय रेड इंडियनों के अधीन में था। यहाँ पर फ्रान्स, इंग्लैण्ड तथा इंडियनों ने लड़ाइयाँ लड़ते "आँख मिचौनी" खेली थी। इंडियन लोग इस प्रदेश को "मनिटोन्ना" कहा करते थे, जिसका अर्थ "महाशक्ति का उद्यान" होता है। १९ वीं शताब्दी के समाप्त होने के पहले ही अमेरिकावासियों ने अनेक टापू ख़रीदकर, वहाँ पर अपने ग्रीष्मावास के महल बनवाये। इसलिए विश्राम केन्द्र के रूप में इस प्रदेश की बड़ी ख्याति हुई। यह एक सुंदर प्रदेश भी है, इसलिए मनोरंजन व विनोद के वास्ते असंख्य लोग यहाँ पर आते हैं और नावों की सैर करते हैं।

Photo by D. N. Shirke

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'किधौं प्राण, मन तिन कौ तरसैं'

प्रेषक : सगीरुल हसन - दिल्ली

Photo by Prasad

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'किधौं नेह बिनु माँगे बरसै'

प्रेषक : सगीरुल हसन - दिल्ली

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

अप्रैल १९७० :: पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० फ़रवरी १९७० के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

फ़रवरी – प्रतियोगिता – फल

फ़रवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं।

इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **किधौं प्राण, मन तिन कौ तरसै**

दूसरा फ़ोटो: **किधौं नेह बिनु माँगे बरसै**

प्रेषक: **श्री सगीरुल हसन,**

तोता बिल्डिंग, मेहरौली, नई दिल्ली - ३०

Printed by B. V. REDDI at Th Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'